

हिन्दी की क्रियाएँ

(प्रयोग आवृत्ति और रचना)



केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

आगरा

केन्द्रीय हि. वि. संस्थान, आगरा
की ओर से सादर भेंट।



हिन्दी की क्रियाएँ

(प्रयोग आवृत्ति और रचना)



केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

आगरा

विषय सूची

आमुख	अ
प्रस्तावना	इ
हिन्दी क्रिया रूपों की आवृत्ति संख्या	१
हिन्दी धातुओं से लगने वाले प्रत्ययों का वर्णन	१६
एक धातु का अनेक संदर्भों में प्रयोग	३१
धातुएँ और उनके संभावित रूप	४४
संयुक्त क्रियाएँ	४८

आमुख

१९६३-६४ के सत्र में आरम्भ की गयी प्रायोजनाओं में 'हिन्दी की आधारभूत शब्दावली' एक वर्ष पहले प्रकाशित हो चुकी है। इस बीच एक अन्य प्रायोजना जिसमें हिंदी परसर्गों के प्रयोग का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, पूरा हो कर इसी के साथ प्रकाशित हो रही है। 'हिंदी की आधारभूत शब्दावली' के साथ 'हिंदी की क्रियाएँ—प्रयोग-आवृत्ति और रचना' शीर्षक प्रायोजना पर संस्थान के तत्कालीन शोध छात्र श्री (अब डा०) चतुर्भुज सहाय १९६४ के सत्र से कार्य कर रहे थे। इस शोध-कार्य की क्रमिक प्रगति का परिचय "गवेषणा" के माध्यम से दिया जाता रहा है। यदि डा० चतुर्भुज सहाय को उनके शोध-कार्य के साथ-साथ अध्यापन कार्य का अतिरिक्त दायित्व वहन न करना पड़ता, तो निश्चय ही इस प्रायोजना को प्रकाशित करने में इतना विलम्ब न होता। परन्तु यह प्रसन्नता की बात है कि इस बीच डा० सहाय ने कार्य को अधिक परिपुष्ट और विश्वसनीय बनाने का प्रयत्न किया है। आरम्भ में इस प्रायोजना का उद्देश्य हिंदी की आधारभूत क्रियाओं की प्रयोग-आवृत्ति के आधार पर उन्हें वर्गीकृत करने तक सीमित रखने का विचार था। परन्तु बाद में यह आवश्यक समझा गया कि अन्य भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण में अधिक उपयोगी बनाने के लिए हिंदी की आधारभूत क्रियाओं के वर्गीकरण के साथ-साथ विभिन्न संदर्भों में प्रयोजनीय उनकी रचना को भी सम्मिलित कर लिया जाय।

प्रस्तुत अध्ययन हिंदी के कुछ चुने हुए निबन्ध और कथा-साहित्य के आधार पर किया गया है। यदि इसमें बोलचाल की भाषा से भी क्रियाओं का संकलन किया जाता, तो सम्भव है कार्य अधिक प्रामाणिक और उपादेय बन जाता; यह भी सम्भव है कि लिखित भाषा और मौखिक भाषा में कुछ क्रियाओं की आवृत्ति-संख्या में भी अन्तर आ जाता। परन्तु अभी हम इसे केवल लिखित भाषा के अध्ययन के परिणाम के रूप में ही प्रकाशित करना उचित समझते हैं। लिखित भाषा के उदाहरणों के संकलन का कार्य, जो

स्पष्टतः कठिन और जटिल कार्य है, इस अध्ययन को अधिक परिपूर्ण बनाने लिए किया जा रहा है ।

हमने इस कार्य को यथासम्भव पूर्ण वैज्ञानिक ढंग से सम्पन्न कराने का प्रयत्न किया है । फिर भी, हम अपेक्षा करते हैं कि इस कार्य में रुचि रखने वाले विद्वान् अपने बहुमूल्य सुभावों के द्वारा इसे अधिक उपयोगी बनाने में हमारी सहायता करेंगे, जिससे इसके द्वितीय संस्करण में इसकी त्रुटियों को दूर करने के साथ-साथ हम इसे परिवर्द्धित रूप में प्रकाशित कर सकें ।

संस्थान की व्यावहारिक शोध की प्रायोजनाएँ अन्य भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए सामग्री प्रस्तुत करने के उद्देश्य से संपन्न की जा रही हैं । अध्ययन और शोध का यह क्षेत्र अभी बहुत बड़ी मात्रा में कार्य की अपेक्षा रखता है । केन्द्रीय हिन्दी संस्थान को इस क्षेत्र में अग्रसर होने का गौरव अनुभव करते हुए इस की गुरुता और महत्ता की भी यथेष्ट अनुभूति है । हम विश्वास करते हैं कि वैज्ञानिक रूप में हिंदी के शिक्षण का कार्य संचालित करने के इच्छुक शिक्षक और विद्वान् हमारे कार्य का परीक्षण करते हुए हमें अपने सुभावों से लाभान्वित करते रहेंगे ।

मैं अपने सहयोगी डा० चतुर्भुज सहाय को, जिन्होंने शोध छात्र के रूप में संस्थान में आकर इस कार्य को परिश्रम और लगन के साथ पूरा किया तथा जिन्हें बाद में प्राध्यापक के रूप में संस्थान में कार्य करने का अवसर मिला साधुवाद देता हूँ । मुझे विश्वास है कि हिंदी की क्रियाओं के इस अध्ययन से हिन्दी के शिक्षकों की सहायता मिलेगी ।

आगरा
१७-४-१९६८

}

सजेश्वर वर्मा
प्रोफेसर और निदेशक
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

प्रस्तावना

संस्थान के व्यावहारिक शोध की आरंभिक प्रायोजनाओं में 'हिंदी की क्रियाएँ : प्रयोग-आवृत्ति और रचना' का लक्ष्य, अन्य प्रायोजनाओं की तरह भाषा शिक्षण के लिए उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करना ही है। हिन्दी में क्रिया के कारण वाक्य-रचना अत्यधिक प्रभावित होती है। इसलिए वाक्य-संरचनाओं को समझने के लिए क्रियाओं का अच्छा परिचय अपरिहार्य है। प्रस्तुत अध्ययन में क्रियाओं के प्रयोगों की आवृत्ति-संख्या दी गयी है। संक्षेप में, धातुओं से लगने वाले प्रत्ययों का वर्णन, विभिन्न सन्दर्भों में धातुओं का प्रयोग, धातुओं के संभावित रूप और संयुक्त क्रियाएँ भी इस प्रायोजना की सीमा में आ गयी हैं।

प्रथम अध्याय में क्रिया रूपों की आवृत्ति संख्या दी गयी है। आवृत्ति संख्या देने के पूर्व क्रिया रूपों का कई दृष्टियों से वर्गीकरण कर दिया गया है, यथा, साधारण क्रियाएँ और संयुक्त क्रियाएँ, काल बोधक क्रियाएँ और वृत्ति बोधक क्रियाएँ। साधारण क्रिया के वर्ग में 'चला है', 'जाता है', आदि क्रिया-रूपों को भी सम्मिलित कर लिया गया है। इस अध्याय में संयुक्त क्रियाओं के वर्ग में केवल उन क्रियाओं को स्थान दिया गया है जो मुख्य क्रिया और रंजक क्रिया (आना, उठना, जाना आदि सहायक क्रियाओं) की सहायता से बनी हैं। संयुक्त क्रिया के अन्तर्गत प्रत्येक रंजक या सहायक क्रिया के साथ बनने वाली संयुक्त क्रियाओं की आवृत्ति संख्या अलग-अलग दी गयी है। संयुक्त क्रियाओं में सहायक क्रियाओं को ही प्रधान माना गया है, क्योंकि किसी भी प्रधान क्रिया को बदलकर उसकी जगह अन्य प्रधान क्रिया को भी प्रयुक्त किया जा सकता है, जैसे 'काँप उठता है' क्रिया रूप में 'उठता है' मुख्य अंश है क्योंकि 'काँप' क्रिया की जगह अन्य प्रधान क्रिया भी आ सकती है, जैसे 'काँप' उठता है', 'जाग उठता है', 'चाँक उठता है', आदि। इसी तरह 'गाया जा सकता है', में 'जा सकता है' मुख्य है क्योंकि मुख्य-मुख्य क्रिया की जगह अन्य मुख्य क्रियाएँ आ सकती हैं, जैसे 'खाया जा सकता है', 'उठाया जा सकता है' आदि इस तरह की जितनी क्रिया-रचनाएँ हैं उनमें किसी एक को मुख्य मान कर आवृत्ति, गणना की गयी है। वृत्तिबोधक क्रिया रूपों की प्रयोग आवृत्ति को कालबोधक

क्रिया रूपों की प्रयोग आवृत्ति से पृथक् किया गया है। हिन्दी की क्रियाओं में काल और वृत्ति की एक साथ अभिव्यक्ति सर्वत्र नहीं होती। कालरचना और वृत्ति रचना को पृथक् रखने में अधिक सुविधा है। साधारण और संयुक्त क्रियाओं के अतिरिक्त क्रिया से निष्पन्न अर्थरूपों की भी आवृत्ति संख्या दी गयी है, जिनमें कुछ अव्यय रूप में प्रयुक्त होते हैं, कुछ विकारी शब्दों के रूप में।

दूसरे अध्याय में हिन्दी धातुओं से लगने वाले प्रत्ययों का वर्णन किया गया है इनमें कालबोधक, व्यापार की अवस्था के बोधक और वृत्तिबोधक प्रत्यय मुख्य हैं। 'ता' और 'आ' को क्रमशः वर्तमानकालिक और भूतकालिक कृदन्त के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है। 'है', 'था' और 'गा' पदग्रामों को काल-बोधक माना गया है। इनमें 'गा' की स्थिति 'है', 'था' की तुलना में अधिक अनिश्चित है। 'गा' का प्रयोग वर्तमान और भूत काल में भी मिलता है, जैसे, मैं प्रार्थना करूँगा कि मुख्य अतिथि अपना वक्तव्य दें (वर्तमान काल); वह दस वर्ष का रहा होगा कि उसकी माता का देहान्त हो गया (भूतकाल)। इसी तरह 'है' का प्रयोग भविष्यकाल में भी होता है। व्यापार में अवस्थाबोधक प्रत्यय दो हैं 'ता' और 'आ'। किन्तु इनके अतिरिक्त 'रहा' को व्यापार का अवस्थाबोधक शब्द माना जा सकता है। 'ता' व्यापार की अपूर्णता और अभ्यास, 'औ' व्यापार की पूर्णता और 'रहा' व्यापार की अपूर्णता के सूचक हैं। कालबोधक पदग्राम सीधे धातु से कभी संयुक्त नहीं होते हैं। 'और' 'था' व्यापार की अवस्था के बोधक प्रत्ययों के बाद ही आते हैं, जैसे, खाता है, खाता था, खाया है, खाया था। 'गा' वृत्तिबोधक प्रत्ययों के बाद धातु से संयुक्त होता है, जैसे जाऊँगा, जाओगे आदि। व्यापार की अपूर्णता दिखाने के लिए 'रहा' का प्रयोग बहुत अधिक होता है।

तीसरे अध्याय में एक धातु या क्रिया के विभिन्न प्रयोगों की सूची दी गयी है। कई क्रियाओं का प्रयोग मुख्यार्थ के अतिरिक्त अन्यार्थ में भी होता है, जैसे, फल का कटना, जीवन का कटना, रास्ते का कटना, पैसा कमाना, नाम कमाना आदि। चौथे अध्याय में अनेक स्वरांत और व्यंजनांत धातुओं के प्रत्यय-संयुक्त रूपों का वर्णन है। कुछ धातुएँ कुछ प्रत्ययों के साथ विकृत हो जाती हैं और कुछ के साथ नहीं। 'दे' से एक तरफ़ दे देता है, वे रहा

जैसे अविकृत रूप होंगे, दूसरी तरफ 'दू' 'दो' 'दीजिए' जैसे विकृत रूप होंगे। इसी तरह अन्य कई धातुओं में विकार होते हैं। रूपात्मक दृष्टि से धातुओं का वर्गीकरण होना चाहिए। 'दे', 'ले' एक वर्ग में जायेंगे और इनमें एक तरह से विकार होंगे—'दू' 'दो' 'दीजिए'—'लू', 'लो' 'लीजिए'। 'सो', 'रो' एक वर्ग में आयेंगे और एक ही तरह से विकृत होंगे, जैसे, खुलाना, रूलाना, किन्तु सकर्मक ओकारान्त 'खो (ना)' से खुलाना रूप नहीं बनता।

पाँचवें अध्याय में संयुक्त क्रियाओं का वर्णन है। संयुक्त क्रियाओं का सर्वप्रथम दो वर्गों में विभाजित कर दिया गया है, मुख्य क्रिया + सहायक या रंजक क्रियाएँ और संज्ञा या विशेषण + क्रियाएँ। पहले प्रकार की संयुक्त क्रियाओं का अपेक्षाकृत विस्तृत वर्णन किया गया है। दो घटकों से बनने वाली संयुक्त क्रियाओं से लेकर पाँच घटकों से बनने वाली संयुक्त क्रियाओं तक का अलग-अलग वर्णन हुआ है। सहायक क्रिया के रूप में आने वाली धातुओं की सूची दे दी गयी है। प्रयोग-क्षमता के आधार पर पुनः इन सहायक क्रियाओं का वर्गीकरण किया गया है। कुछ सहायक क्रियाएँ पाँच घटकों से बनने वाली संयुक्त क्रियाओं (जैसे, कहा, चला, आ, रहा है,) के प्रत्येक खण्ड में आ सकती हैं, कुछ प्रत्येक खण्ड में नहीं आ सकतीं जैसे 'है' क्रिया प्रत्येक खण्ड में आ सकती है। 'सकता' पहले और पाँचवें खण्ड में नहीं आ सकती। इसी तरह अन्य सहायक क्रियाओं के बारे में कहा जा सकता है। चौथे खण्ड में 'रहना' 'सकना', 'लगना', 'चुकना', 'होना' क्रियाएँ ही सामान्य रूप से आती हैं। सहायक क्रियाएँ अपने पूर्व आने वाली मुख्य क्रिया या सहायक क्रिया के रूप पर भी नियन्त्रण रखती हैं, जैसे, 'उठना' के पूर्व धातु रूप ही आता है जैसे, काँप उठता है, चीक उठता है, 'करना' के पूर्व 'आ प्रत्यय' धातु रूप ही आ सकता है, खाया करता है, खा लिया करता है, आदि। कुछ सहायक क्रियाएँ ऐसी हैं जिनका प्रयोग अत्यन्त सीमित है, जैसे 'टपकना'। 'टपकना' का केवल एक प्रयोग मिलता है आ टपकना। संज्ञा और विशेषण से बनने वाली संयुक्त क्रियाओं का वर्णन अपेक्षाकृत संक्षिप्त है। अन्त में संज्ञा और विशेषण के साथ मुहावरेदार प्रयोग में सम्मिलित होने वाली क्रियाओं की सूची दी गयी है।

इस प्रायोजना के लिए जिस सामग्री का उपयोग किया गया, उसकी प्रकृति और सीमा के बारे में कुछ स्पष्टीकरण आवश्यक है। यह प्रायोजना

भाषा की लिखित सामग्री पर ही आधारित है, इसलिए इस के निष्कर्ष हिंदी की लिखित शैली के लिए अधिक उपयोगी हैं। सबसे पहले इस अध्ययन के लिए प्रेमचन्द का एक कहानी संग्रह और डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी का एक निबन्ध संग्रह, केवल दो पुस्तकें चुनी गयी थीं। इन पुस्तकों पर कार्य करने के बाद यशपाल का 'भूठा सच' (प्रथम भाग) लिया गया। किन्तु इस पर कुछ कार्य करने के बाद अनुभव किया गया कि प्रयोग, आवृत्ति की दृष्टि से कोई नया निष्कर्ष निकलता हुआ नहीं दिखायी पड़ा अर्थात् प्रयोग-आवृत्ति जानने की दृष्टि से पूर्व सामग्री यथेष्ट जान पड़ती है। अतः 'भूठा सच' का उपयोग बन्द कर दिया गया। दूसरी बात यह कि प्रयोग-आवृत्ति की दृष्टि से सामग्री का परिमाण पर्याप्त होते हुए भी धातुओं, उनमें लगने वाले प्रत्ययों, संयुक्त क्रियाओं आदि के विशद और वैज्ञानिक वर्णन की दृष्टि से वह यथेष्ट नहीं है। किन्तु आरम्भ में क्रियाओं की प्रयोग-आवृत्ति को ही लक्ष्य बनाने के कारण सामग्री का विस्तार नहीं किया जा सका। अतः अध्ययन को विस्तार दे कर क्रिया में लगने वाले प्रत्ययों, संयुक्त क्रियाओं आदि के वर्णन में परिवर्तन और परिवर्धन की संभावनाएँ बहुत हैं।

भाषा-शिक्षण की दृष्टि से प्रस्तुत कार्य का उपयोग कई तरह से किया जा सकता है, जैसे, भाषा की पाठ्यपुस्तकों के निर्माण में यह सामग्री निश्चय ही सहायक होगी। भाषा-शिक्षण को वैज्ञानिक रूप में व्यवस्थित करने के लिए शिक्षण सामग्री का चयन और अनुक्रमण आवश्यक है। क्रियारूपों का अनुक्रमण उनकी प्रयोग-आवृत्ति की आनुपातिक संख्या के आधार पर आसानी से किया जा सकता है। भाषा-अध्यापक के लिए यह सामग्री विषय को अधिक वैज्ञानिक और सरल ढंग से प्रस्तुत करने में सहायता दे सकती है।

यह कार्य संस्थान निदेशक डा० ब्रजेश्वर वर्मा के निरीक्षण में पूरा किया गया है। मैं इसे उन्हीं की प्रेरणा और सहायता का प्रतिफल मानता हूँ। समय-समय पर इस कार्य में मुझे संस्थान के रीडर डा० राजगोपालन से भी सहायता मिली है। उनके प्रति भी आभार प्रकट करना मेरा कर्तव्य है।

चतुर्भुज सहाय

हिंदी क्रिया रूपों की आवृत्ति संख्या

क्रियारूपों के चयन के लिए दो पुस्तकें चुनी गयीं—मानसरोवर (तृतीय-भाग) कहानी संग्रह, लेखक प्रेमचन्द, पाँचवाँ संस्करण १९५४, और अशोक के फूल, निबंध संग्रह, डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, चौथी बार, १९५५। दोनों पुस्तकों में मिलाकर लगभग पौने दो लाख, शब्द आये हैं। क्रिया-पदों के अतिरिक्त धातु से सिद्ध अन्य रूपों (जैसे कृदन्त विशेषण, क्रियार्थक संज्ञा) की आवृत्ति संख्या भी इसमें सम्मिलित है। धातुओं से बने प्रयोगों पर भी ध्यान रखा गया है, जैसे 'गरीबी के मारे', 'रात गये', 'बिना कहे', 'उठे बिना' आदि। उपर्युक्त दो पुस्तकों के अतिरिक्त यशपाल कृत 'भूठा सच' (प्रथम भाग) भी योजना के लिए लिया गया। किन्तु जो निष्कर्ष प्रथम दो पुस्तकों (अशोक के फूल और मान सरोवर) के आधार पर निकाले गये उनसे कोई भिन्न निष्कर्ष 'भूठासच' में प्रयुक्त क्रियारूपों के आधार पर निकलते नहीं दिखायी पड़े। इसलिए 'भूठासच' के कुछ पृष्ठों तक कार्य करने के बाद उसे छोड़ दिया गया।

जिन दो पुस्तकों से क्रियारूप चुने गये हैं उनकी भाषा मंजी हुई, चलती और सजीव है। बहुत सावधानी से कार्य करने पर भी यह सम्भव है कि कुछ क्रियारूप छूट गये हों, जिससे उनकी आवृत्ति संख्या में कमी पड़ सकती है। किन्तु इससे प्रस्तुत योजना के निष्कर्ष में कोई अन्तर नहीं पड़ता। वास्तव में हमें क्रियारूपों की आवृत्ति संख्या नहीं बल्कि क्रियारूपों का आनुपातिक प्रयोग जानना है। प्रयोग किस अनुपात में है ? यह जानना योजना का मुख्य उद्देश्य है।

हिन्दी क्रिया रचना पर वचन, लिंग, पुरुष, वाच्य, वृत्ति तथा काल का प्रभाव पड़ता है। इनमें वचन, पुरुष तथा लिंग के कारण क्रिया रचना में जटिलता नहीं आती। वाच्य का प्रभाव भी सीमित है। केवल काल और वृत्ति के कारण क्रिया रचना में जटिलता और विविधता आ जाती है। हिन्दी में काल और वृत्ति को एक साथ रखने से क्रिया-रचना में काफी उलझन है। क्रिया रचना में इन दोनों को अलग-अलग ध्यान में रखने से सुविधा हो जाती

है। वास्तव में वृत्तियों का सम्बन्ध काल से प्रायः नहीं होता। प्रसंग के अनुसार वृत्तिबोधक एक क्रियारूप ही कई कालों में प्रयुक्त हो सकता है। जैसे “यदि वह आता तो मैं जाता”। बिना सन्दर्भ जाने, यहाँ काल निर्णय नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत वाक्य का प्रयोग भूत, भविष्य दोनों कालों में चल सकता है। वृत्ति को प्रकट करने के लिये भूतकालिक क्रियारूपों का व्यवहार भविष्य में भी किया जा सकता है। “यदि वह आया तो मैं जाऊंगा”। ‘आया’ यहाँ भूतकालिक नहीं है। अतः क्रिया रूपों की जो सूची प्रस्तुत की गयी है उसमें वृत्तिबोधक क्रियारूपों को अन्य क्रियारूपों से पृथक रखा गया है।

क्रिया रचना पर प्रभाव डालने वाली वचन, पुरुष आदि जिन व्याकरणिक कोटियों का उल्लेख ऊपर किया गया, उनमें पुरुष, वचन तथा लिंग के कारण क्रिया रचना में होने वाले परिवर्तनों को छोड़ दिया गया है। जैसे ‘आता है’ के अन्तर्गत ‘आती है’ ‘आते हैं,’ दोनों आएंगे। ‘आऊंगा’, के अन्तर्गत ‘आएंगी, आओगे’—सभी रूप सम्मिलित हैं। आया के अन्तर्गत ‘आये, आयी आयी’ सब सम्मिलित हैं।

संज्ञा और विशेषण से संयुक्त क्रियापदों की सूची अलग से बनायी गयी है। उनको प्रस्तुत सूची से पृथक रखा गया है। करना, होना, लगना, आना आदि संज्ञा विशेषण से संयुक्त भी हो जाते हैं। इनका ऐसी जगहों में प्रायः मुहावरेदार प्रयोग होता है और धातु अंश अपना मुख्यार्थ छोड़ देता है। इनको प्रस्तुत सूची से पृथक रखने से क्रियारूपों की आनुपातिक आवृत्ति संख्या पर कोई असर नहीं पड़ता। क्रिया से संयुक्त होने वाली संज्ञाएं प्रायः अमूर्त होती हैं जैसे : आशा करना, आज्ञा देना, प्रतीक्षा करना, नाम लेना आदि। नीचे संख्याओं की आवृत्ति दी जा रही है।

क्रियारूपों की आवृत्ति संख्या

मूल क्रियाएं		आवृत्ति संख्या
पूर्णभूत	+आया	१२५७
पूर्वकालिक	रहकर	११०८
वर्तमान	जाती है	७६३
भविष्य	जाएगा	५६५
वर्तमान पूर्ण	आयी है	३६७
भूत अभ्यास	आता था	५००

भूतपूर्ण	आया था	२८४
पूर्वकालिक-बिना 'कर' के	उछल (कर)	१८
पूर्व का० आवृत्ति	उठ-उठकर	८
वर्त० अपूर्ण	कहूँ	२
„	जैसे, वही तो मैं कहूँ (कह रही हूँ)	
वर्त० अपूर्ण	आती हूँ (आ रही हूँ)	२८०
„	जैसे, रहने दो, मैं आती हूँ । अभी आता हूँ	
भूत अपूर्ण	आता था (आरहा था)	१०६
„	जैसे, जब मैं खड़ा था तो दुर्गन्ध आती थी	
वर्त० अपूर्ण	कहूँगा (कह रहा हूँ)	२
„	जैसे, मैं मान्यवर अतिथि से कहूँगा कि वे अपना वक्तव्य दें ।	
भविष्य	आया (आरहा हूँ, आऊँगा)	४
„	जैसे, चलो, मैं आया ।	

अन्य प्रयोग—

(उसका) क्या पूछना	—	१
(वह) क्या जाने	--	२
(गरीबी के) मारे	—	२
आये—बिना	—	१५
पड़े—पड़े	—	१४
रात गये	—	१
बिना कहे	—	६
गिने गिनाये	—	१
आये दिन	—	४

पृष्ठ दो के चिन्ह+ के लिए विशेष

+ 'आया' क्रियारूप अन्य धातुओं के भूतकालिक रूपों (खाया, पाया आदि) का प्रतिनिधित्व करता है । ऐसा ही अन्य क्रियारूपों के बारे में समझना चाहिये ।

तात्कालिक कृदन्त	आते ही—	४५
समय के साथ	नहलाते समय—	१४
वर्त का० विशेषण	जाता हुआ—	१३७
वर्त का० विशेषण—बिना	उठता (हुआ)—	७१
‘हुआ’ के		
भूत का० विशेष०	उठा हुआ—	१६८

इस घटना को हुए—	२
कहते-कहते—	३६
उसके बदले—	१
काटे कटती नहीं—	१
छुटायें छूटती नहीं—	१
खुलकर रहेगा—	१

संयुक्त क्रियाएं—सहायक क्रियाओं से बनने वाले क्रिया रूप

१—मूल धातु + आ + आना

२—मूलधातु + ता + आना

३—मूलधातु + आता

१—आना

चली आयी— १४

चली आयी है— १

चला आया था— २

चली आ रही है— ८

चली आ रही थी— ४

चला आता है (अपूर्ण रूप में चला जा रहा है)

जैसे, देखो वह चला आता है ।

लेता आया था— १

कहता आया है— ६

दौड़े आते थे (दौड़े आ रहे थे)— ३

निकल आता था— ७

चढ़ आता है— ३

निखरती आती है (निखरती आ रही है)— १

लौट आयी थी— १

लौट आया— ७

बढ़ते आते थे— (बढ़ते आ रहे थे)— १

ढोते आ रहे हैं— २

घुस आएगी— २

ले आना चाहता है— १

ले आ सकता है— १

ले आया जाता है— १

२—उठना

मूल धातु + उठना

काँप उठता है — ६

काँप उठती थी — ६

काँप उठा — २६

चमक उठी थी — १

लहक उठा है — १

चिल्ला उठोगे — ६

३—करना

मूल धातु + आ + करना

आया करते है — १८

आया करते थे — ४४

बातें हुआ कीं (होती रहीं)— २

४—चलना

१—मूलधातु + ता + चलना

२—मूलधातु + आ + चलना

३—मूलधातु + चलना

खाते चले आये है—(अपूर्ण अवस्था) — १

खेलते चले आ रहे हैं — १

दौड़े चले आ रहे हैं — १

देखती चली आती है (अपूर्ण)	—	५
दीड़े चले आते थे (अपूर्ण)	—	५
बढ़ता चला जाता था (अपूर्ण)	—	२
बढ़ती चली जा रही है	—	२
भगाता चला आया था	—	१
बह चली है	—	१
पक चले थे	—	३

५—चाहना मूलधातु + ना + चाहना

कहना चाहता हूँ (अपूर्ण)	—	३०
हटाना चाहूँगा	—	२
कहना चाहते थे (अपूर्ण)	—	१७
पकड़ना चाहा	—	४
बताना चाहा था	—	२

६—चुकना मूलधातु + चुकना

कह चुका है	—	१५
आ चुका था	—	२२

७—छोड़ना मूलधातु + छोड़ना

रख छोड़ा है	—	१
रख छोड़ी थी	—	१

८—जाना

१—मूलधातु + आ + जाना

२—मूलधातु + ता + जाना

३—मूलधातु + जाना

आ जाएगी	—	१०६
आ जाता है	—	४१
आ जाती थी	—	६३
आ गया	—	३६३

आ गया है	—	६४
आ गया था	—	६५
उखड़ा जा रहा है	—	२
उजड़ा जाता था (अपूर्ण)	—	१२
वह शोक में धुली जाती है (अपूर्ण)	—	६७
कुम्हलाती जाती थी (अपूर्ण)	—	४
बिगड़ता गया	—	२१
दिये जाती है (वर्त० अपूर्ण)	—	३
बताये जा रहा है	—	३
खाये जाती थी (अपूर्ण)	—	७
(तुम तब तक) गाये जाओगे	—	१
ले जाने दोगे	—	१
ले जाना है	—	१
बढ़ती जाती है (अपूर्ण)	—	३
आप बैठिए, मैं चली जाती हूँ (चली जा रही हूँ		
भविष्य)	—	१
गाया जाता था (अभ्यास)	—	७
बनाया जाता था (अपूर्ण)	—	२७
दबते जाएंगे	—	६
निकाली जा रही है	—	२
पहने जा रहे थे	—	७
उठा नहीं जाता	—	५
ले जा सकता है	—	१
कमाया जा सकेगा	—	२
धुमायी जा सकती है	—	४३
रोकी जा सकती थी	—	१
जाना जा सका	—	३
जाना जा सका है	—	३
छोड़ता जा रहा है	—	१
चला जा रहा था	—	३
बनती जा रही थी	—	२

पहचाने जाते हो (अपूर्ण)	—	११
बनाया जाता रहा है	—	४
समझी जाती रही है	—	३
मिलते गये हैं	—	६
रखे जा चुके थे	—	१
कटवाया गया	—	४८
देखा गया है	—	६२
देखा गया था	—	२८
कहा जाएगा	—	२०
लिखे जा रहे थे	—	१
मिल जाया करते हैं	—	२
लिखे जा चुके थे	—	१
ले जाया जा सका	—	१
माना जाने लगा था	—	१
कहा जाने लगा है	—	३
बरस जाना चाहता है	—	१ (अपूर्ण)
पहुँच जाना चाहता था	—	१ (अपूर्ण)

६—डालना

मूलधातु + डालना

खोद डालता था	—	२
फाड़ डालिएगा	—	३
धुला डाला	—	६
पढ़ डाला था	—	१

१०—देना

- १—मूलधातु + ना + देना
 २—मूलधातु + देना
 ३—मूलधातु + ए + देना
 ४—मूलधातु + आ + देना

आने देती है	—	३
तोड़ने देती है	—	६
आने देता था	—	४

आने दिया	—	१
आने दिया है	—	१
जाने देना चाहता था	—	१
मिट्टा देना चाहता है	—	१
मिट्टा देना चाहता था	—	२
उतार देना चाहिए था	—	१
चुका देना है	—	२
छोड़ देना होगा	—	२
दे देनी पड़ती थी	—	१
कह दूंगी	—	६६
कहे देती हूँ (कहे दे रही हूँ)	—	८
अभी दुत्कारे देती हूँ (भविष्य)	—	१
उड़ा देता है	—	३१
उठा दिया	—	१११
उछाल देता था	—	२०
उतार दिया था	—	१८
उड़ाये देता था (अपूर्ण)	—	३
कह दिया है	—	८
मसले दे रहे हैं	—	१
दिखायी देती है	—	१२
दिखायी देती थी	—	११
दिखायी दिया	—	१४
दिखायी देता है (अपूर्ण)	—	१
दिखायी दे जाता है	—	४
चुन दिया गया	—	६
उठा दी जाती थी	—	७
बढ़ा लिया जाता है	—	५
छोड़ दिया गया है	—	७
खोल दिया गया था	—	६
कह दिया जायेगा	—	५

दिखाई दे रही है	—	२
दिखाई देने लगे हैं	—	१
सुनाई देने लगी	—	२
ढाल दिया जा सकता है	—	१
चरा दिया करता था	—	२
डांट दिया करते हैं	—	१

११—पड़ना —

१—मूलधातु + पड़ना		
२—मूलधातु + ना + पड़ना		
३—मूलधातु + आ + पड़ना		
जान पड़ा	—	५६
जान पड़ता है	—	२५
आ पड़ा है	—	१०
जान पड़ता था	—	१०
जाना पड़ता था (अपूर्ण)	—	३
जान पड़ा था	—	२
जुतना पड़ता था	—	१६
निगलना पड़ रहा है	—	१
भेलना पड़ा	—	११
बदलना पड़ा है	—	३
गुजरना पड़ा था	—	१
उगलना पड़ेगा	—	३१
गिर पड़ेगा	—	६
दिखाई पड़ती है	—	१
उछला पड़ता था (अपूर्ण)	—	३
मुझे अब कहना पड़ता है	—	२
(कहना पड़ रहा है)		

१२—पाना

- १— मूलधातु + ने + पाना
 २— मूलधातु + जाना

गुजरने पाया था	—	३
घुसने पाओगे	—	२
बचने पाता था	—	१
काट जाता है	—	८
बन पाएगा	—	१
बच पाया है	—	१
हो पाया	—	१
समझ पा रही थी	—	१

१३—बैठना

१—मूलधातु + ए + बैठना

२—मूलधातु + बैठना

पढ़े बैठा है — १

चढ़ बैठेंगे — ६

१४—निकालना

मूलधातु + निकालना

सोच निकाला — १

खोज निकाला चाहता हूँ (अपूर्ण) — १

१५—पहुँचना

मूलधातु + पहुँचना

आ पहुँचते थे — २

जा पहुँचता है — १

आ पहुँचा — २६

आ पहुँचा है — १

१६—भेजना

मूलधातु + भेजना

बुला भेजा — ३

१७—रखना

१—मूलधातु + रखना

२—मूलधातु + ये + रखना

बनाये रखा है	—	१
गढ़ रखा है	—	१६
दे रखा था	—	४
रोके रखा जा सकता है	—	१

१८—रहना

१—मूलधातु + रहना		
२—मूलधातु + आ + रहना		
३—मूलधातु + ता + रहना		
आ रहा है	—	१८४
वह कल आ रहा है (भवि०)	—	१
बच रही है (बच गयी है)	—	२
बच रहेगा	—	१
आ रहा था	—	१७६
पड़ा रहूँगा	—	११
आता रहेगा	—	७
दबक रहे (दबक गये)	—	८
उठा रह गया	—	३
उड़ती रहती थी	—	२७
मुसकराती रहती है	—	१६
कहता रहा	—	४७
आती रही है	—	१६
पड़ रहते हैं	—	३
पड़ रहता था	—	१
पड़ा रह जाएगा	—	१
बैठी रह जाती है	—	२
उलझा रह जाता है	—	२
बैठा न रहा गया	—	१
भरा रहता है	—	१५
घुसा रहता था	—	१६
टिका रह सकता है	—	३
खुसा रहा	—	४

१६—लगना

मूलधातु + ना + लगना

आने लगा	—	१७६
मुरझाने लगा है	—	६
बाने लगा था	—	६
उठने लगती है	—	७
नीकर क्यों चूकने लगे (चूकें)	—	१
उठने लगती थी	—	१४
गाने लगूँगा	—	७

२०—बनना

मूलधातु + ते + बनना

उगलते बनता है (अपूर्ण)	—	२
कहते बनता था (अपूर्ण)	—	४

२१—लेना

१—मूलधातु + लेना

२—मूलधातु + ये + लेना

उठा लिया	—	६४
छू लिया है	—	१४
पिसबा लिया था	—	१२
घसीट ले जाएगी	—	२
देख लिया करेंगे (भवि०)	—	१
पी लिया करते थे	—	१
उड़ाये लिये जाती थी (अपूर्ण)	—	३
छिपा लेती है	—	१५
खरीद लेता था	—	१४
खा लूँगा	—	१८
ले लेना चाहा	—	१
बाँध लेना चाहती है	—	१
अभी गूँथे लेता हूँ	—	(भविष्य) ३
मार ले जाता है	—	१

(वे उसको) घसीटे लिये जाते हैं	—	(अपूर्ण) २
उठा लिया जाएगा	—	१
मान ली जाती है	—	३
चुन लिया गया	—	६
बना ली गयी है	—	७
चुन लिया गया था	—	३
चुका लेना पड़ता है	—	१
सीख ली जा सकती है	—	१

बसना मूलधातु + बसना

चल बसा	—	२
--------	---	---

२२—सकना मूलधातु + सकना

आ सकता है	—	२३१
आ सकेगी	—	२२
जा सकते थे	—	३८
खोल सका	—	२०
आ सका है	—	२१
आ सकी थी	—	२

२३—होना

१—मूलधातु + ना + होना

२—मूलधातु + होना

छिपा होता था	—	३
भगाना होगा	—	१२
आना (विकृत क्रियार्थक संज्ञा)	—	१००२
आना (अविकृत क्रियार्थक संज्ञा)	—	२५६
खाना है	—	४२
आना था	—	१८

सत्तार्थक 'है,' 'हो,' 'हूँ,' 'था' रूपों की आवृत्ति संख्या बहुत अधिक है ।
इनकी आवृत्ति संख्या देना आवश्यक नहीं लगता । सत्तार्थक

होता है , होता था, होगी की भी आवृत्ति संख्या नहीं दी गयी है ।
उदाहरण—नदी में पानी होता है । फलों में रस होता है । वह कहाँ
होगा ? , अब तक तो हम वहाँ होते थे । आदि प्रयोग

वृत्तिबोधक क्रियारूपों की आवृत्ति संख्या

विधि

तुम चित्र देखो (विधि)	१—	२६६
चलो, तुम बातें बनाती हो	—	५
तुम सुखी रहो (आशीर्वाद)	—	१
देखो भाई, कहीं ऐसा न हो कि	—	१७
माना, उसके सारे कष्ट भाग गये	—	५८
तू आ	—	६१
तुम आना	—	४६
आप आइए	—	१०४
चाहे जितनी अच्छी योजना बनाइए	—	२६
जब देखिए, यही करता रहता है	—	५
अजी जाइए	—	१
यह लीजिए, मैं दौड़ कर लाया	—	३
जिसे देखो, वही गंभीर बना है		
चाहे जितना कमाओ	—	४२
आप उठा ले	—	३३
आपको अस्त्रियार है कि आप फाँसी		
पर चढ़ा दें	—	१
आप जरा इसको समझिएगा	—	३
उसको उतार देना चाहिए था	—	५
कहना चाहिए (सुभाव)	—	६३

संभावना

शायद वह आया हो (संभा०वर्त०)	—	६
शायद ये बातें आपने स्वप्न में सुनीं हों (संभा०भूत०)	—	५

वह आता होगा । संभा०वर्त०)	}	१५
वह जानता होगा । संभा०वर्त०)		
वे भविष्य में यहाँ टहलते होंगे (संभा०भवि०)	}	
घर वाले घबरा रहे होंगे — (संभा०वर्त०)		५
वे आते रहे होंगे (संभा०भूत०)	—	२
वे चले गये होंगे, आप एंठे होंगे (संभा०भूत०) —		५१
वे होंगे (सत्तार्थक)	—	३
वह उससे मिला हुआ होगा (संभा०वर्त०) —		१
मानो, हंस रहे हो (संभा०वर्त०)	—	८
शायद आपको खेलना पड़े (संभा०-भवि०) —		२

शर्त

यदि मैं आऊँ तो	—	१०७
छोड़ दिया जाय तो	—	१
काँप गया तो	—	५५
देख लेगा तो	—	१७
आप ने उत्साह दिखाया और हंसी		
के पात्र बने (शर्त०भवि०)	—	१
ले जाना था तो	—	१
यदि वह जाता तो, निकलता तो,		
बाँट देता तो, आदि	—	६२
यदि उसने बुलाया होता तो मैं		
आता (शर्त० भूत०)	—	२७
कसम ले लो जो मैंने एक कौड़ी		
भी उन्हें दी हो (शर्त०)	—	१
यदि वह मिल सकता तो (शर्त० भवि०)	—	१
यदि वे सीख सकते हों तो (वर्त०)	—	२
भरी हो तो (शर्त० वर्त०)	—	१
कुछ काम हो तो	—	६
यदि वह जाता है तो (शर्त०, वर्त०, भवि०) —		२६
मिलता हो तो	—	१

देखना चाहते हो तो (शर्त भवि०) —	८
आज बच्चे होते तो उधलते-फिरते (शर्त. वर्त०—का उत्तरार्ध)	५
यदि वह आए तो जानूँ, यदि वह आता तो मैं पूछती, यदि वह नहीं आया तो मैं जा चुका, — यदि वह छीन झपट न करे तो कैसे गुजर हो	(शर्त, भविष्य का उत्तरार्ध) २५
जब तक वह नहीं चली जाती (भवि०) —	१
यदि दिया है तो —	२
यदि वे आ गये होते तो (शत भूत०)	१०
लिखना हो तो (शर्त-नित्य) —	२
यदि हमें पहुंचाना है तो —	३

संकेत

ऐसा कोई स्थान नहीं था, जहाँ संजीवनी मिल सके, या चारों तरफ से आवाज आए, या उसकी हिम्मत न पड़ी कि वह उसे खोले । आदि —	३६१
वे जीते रहें (शुभकामना) —	१
पत्नी बीमार हो और पति शतरंज खेलता रहे—	४
मैं यथार्थ में अभागिन हूँ, नहीं तो क्या भगवान मेरी कोख में लड़कियाँ ही रचते—	१
अब तक न जाने मैं कहाँ पहुँचा होता —	१
मैं इतना संगीत प्रेमी नहीं हूँ, वरना आज फारस में सितार की ताने सुनता होता (संकेत, वर्त०) —	३
विधवा के आँसू कैसे पुंछते (संकेत, भूत)—	३४
वह विद्यालय गया नहीं, फिर विद्या कहाँ से आती काश ! [मेरे मित्र जानते तो क्यों जलते—(शर्त वर्त०)—	३

क्यों नहीं भँगवा देती,	}	(भविष्य संकेत)
रतना के सिवा और कौन है,		
जिस के लिए उठा रखता, —		
हमारे भाग्य ही फूट गये, नहीं		
तो क्यों जाना पड़ता		१७

उतना अन्यत्र से शायद ही देख सकता (संकेत-भूत) — १

इस पर किसी प्रकार का हिन्दू प्रभाव तो नहीं जान पड़ता — १

जब वह ताकती तो बाँकी चितवन से (संकेत-भूत) — १

क्या यह सम्भव नहीं था कि तुम हृदय में कटार

चुभा देती (संकेत-भूत) १

जरा सी हवा चली कि—	}	(संकेत-नित्य)
जब वह पुराना होते देखा, बदल दिया—		
कभी थियेटर दिखा दिया, कभी कुछ —		
ओला पत्थर से प्राण बचे तो फसल खलिहान में आयी		
		४

जहाँ तक भागा जाय, भागो—	१
चाहे वह आए, चाहे न आए —	३७
वह जितना भी अच्छा हो —	२२

जहाँ से ध्वनि आती हो	}	(संकेत वर्तमान)
जिसके बालक मर जाते हों		
जिसे लोग मानते हों —		
		१३

ऐसे साहित्य की सृष्टि करो कि जिसे पढ़कर

देश उठ खड़ा हो — ४

उसके बदले कहीं हार न बनवाना पड़े—(संकेत भवि०)—१

जो आफत आनी हो, आवे — ३

हम जायें (संकेत) — ६

चाहे आप भूल जायें — २

उड़ जाऊँ	}	—	१६२
कहूँ			

हम अन्न कहाँ से दें — ८

नशा उतरता तो वह रोने लगती (संकेत-भूत०)— २

पानी पी लिया जाय, गरदनें काटी जायें, कौन भेजा जाय	{ —	२३
मैं उनकी जगह पर होता तो कभी न देता (शर्त-तीनों काल)	—	१
वह कभी गिर भी नहीं पड़ता (संकेत-भवि०)	—	३
वे क्यों चूकने लगे (चूकेंगे) संकेत	—	१
हो सकता है, लोग उसे पागल कहने लगें	—	४
ऐसा कभी नहीं रहा कि साहित्य न लिखा गया हो	—	६
(नित्य)		

ऐसा कोई नहीं था जिसकी निगाह उस तरफ न गयी हो — १
(संकेत-भूत)

जिसने विद्या पढ़ी हो, (संकेत-वर्त०) — ६
जिसने मुझे कैद में डाल रखा हो —

हिन्दी धातुओं से लगने वाले प्रत्ययों का वर्णन : —

हिन्दी धातुओं में लगने वाले प्रत्ययों और प्रत्यय के रूप में संयुक्त होने वाले स्वतंत्र शब्दों की सूची नीचे दी जाती है ।

ऊँ, ए (एं), इए, ओ, शून्य, ता, या, गा, है (हूँ, हो, है), था, ना, कर । प्रत्यय के रूप में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को बाद में दिया जाएगा । पहले हम उपर्युक्त प्रत्ययों के व्यापार को देखेंगे । ऊँ, ए, इए, ओ, शून्य, है, ना प्रत्यय लिंग से प्रभावित नहीं होते । इनमें ना का प्रयोग कहीं कहीं लिंग से प्रभावित भी हो सकता है । जैसे, मुझे किताब लिखनी है । मुझे ग्रन्थ लिखना है । ता, या, गा, था प्रत्यय लिंग से प्रभावित होते हैं । कर अव्यय रूप में प्रयुक्त होता है ।

हिन्दी क्रियारूपों से निम्नलिखित अर्थों की अभिव्यक्ति होती है—पुरुष, वचन, लिंग, काल, वृत्ति, वाच्य, व्यापार की अवस्था । (पूर्ण, अपूर्ण अभ्यास) । किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक क्रियारूप से सभी अर्थों की अभिव्यक्ति हो । कुछ क्रिया रूप पुरुष प्रकट कर सकते हैं । (जाओ, जाऊँ,) लिंग नहीं । कुछ क्रियारूप लिंग प्रकट कर सकते हैं (जाता, जाती,) पुरुष नहीं ।

इसी तरह वृत्तियों को प्रकट करने वाले क्रियारूप अनिवार्य रूप से काल-बोधक नहीं होते । “ वह आता तो मैं जाता । ” भूत और भविष्य दोनों कालों में ‘आता’ और ‘जाता’ का प्रयोग हो सकता है ।

अब ‘काल’ ‘वृत्ति’ ‘वाच्य’ आदि को अभिव्यक्त करने वाले प्रत्ययों का अलग-अलग वर्णन होगा । सबसे पहले काल-बोधक प्रत्ययों का वर्णन किया जाता है । “गवेषणा” सितम्बर १९६४ में प्रकाशित ‘हिन्दी क्रिया की काल रचना’ नामक निबन्ध में छह कालों का उल्लेख किया गया है भूत (निकट और दूरवर्ती), वर्तमान (तात्कालिक और सामान्य), भविष्य (निकटवर्ती और दूरवर्ती)

हिन्दी में काल-बोधक प्रत्यय तीन हैं—‘है’ ‘था’ और ‘गा’ । ‘ता’ और ‘या’ को हम काल-बोधक प्रत्यय नहीं कह सकते । वास्तव में ये व्यापार की अवस्थाओं के बोधक प्रत्यय हैं । और इन दोनों प्रत्ययों का प्रयोग व्यापार की अवस्थाओं के द्योतन के अतिरिक्त अन्य अर्थों को प्रकट करने के लिए भी होता है । जाता, जाते ही, जाता हुआ, आदि काल-बोधक नहीं हैं । यही बात ‘या’ के संबंध में भी है । इन दोनों प्रत्ययों के कार्यक्षेत्र का वर्णन आगे चल कर होगा । यहाँ इतना ही अभिप्रेत है कि ये काल बोधक नहीं हैं । ‘है’ का प्रयोग वर्तमान काल में, ‘था’ का भूतकाल में और ‘गा’ का भविष्य में होता है । ‘जाता’ रूप से ही ‘जाता है (वर्तमान) और ‘जाता था’ (भूत) दोनों बन जाते हैं ।

किन्तु धातु से इन काल-बोधक प्रत्ययों का सीधा संबंध नहीं होता । धातु में इन प्रत्ययों के लगने के पहले व्यापार की विभिन्न अवस्थाओं के सूचक प्रत्यय धातुओं में लग जाते हैं । व्यापार की अवस्थाएँ तीन हैं—पूर्ण, अपूर्ण, तथा अभ्यास । इन अवस्थाओं की विस्तृत चर्चा हिन्दी क्रिया की काल रचना नामक निबंध में की गयी है । इन अवस्थाओं के बोधक प्रत्यय क्रमशः ‘या,’ ‘रहा’ और ‘ता’ हैं । यहाँ रहा के संबंध में यह कह देना है कि ‘ता’ और ‘या’ के समान यह केवल आबद्ध रूप नहीं है । किन्तु व्यापार की अवस्था के द्योतन में यह ‘ता’ और ‘या’ के बराबर है और इस सन्दर्भ में हम इसको प्रत्यय मान सकते हैं । यहाँ हम देखते हैं कि काल और व्यापार की अवस्था की एक साथ उपस्थिति अनिवार्य है । इनको अलग-अलग अभिव्यक्त करना कठिन है । काल व्यापार की अवस्था के साथ प्रकट किया जाता है, किन्तु व्यापार की अवस्था का द्योतन स्वतंत्र रूप में भी हो सकता है । जैसे, वह रास्ते भर रोता गया ।

यहाँ 'ता' केवल व्यापार की अवस्था का द्योतक है। वह रोता हुआ आ रहा है। भविष्यकाल की रचना में कुछ भेद है। क्रमशः काल रचना के उदाहरण नीचे हैं—

जाता है	(वर्तमान अभ्यास)
जा रहा है	(वर्तमान अपूर्ण)
गया है	(वर्तमान पूर्ण)
जाता था	(भूत अभ्यास)
जा रहा था	(भूत अपूर्ण)
गया था	(भूत पूर्ण)

भूतपूर्ण का 'था' से रहित रूप भी चलता है (गया—भूतपूर्ण), किंतु यह रूढ़ प्रयोग है, सामान्य नहीं। ऐसे प्रयोग भाषा में अपवाद रूप से चलते हैं। भविष्य काल की रचना कुछ भिन्न है। सामान्य रूप से भविष्यकाल में व्यापार की अवस्था का द्योतन नहीं होता। 'गा' का सम्बन्ध धातु से सीधा नहीं होता। बीच में अन्य प्रत्यय आ जाते हैं। ये प्रत्यय विभिन्न वृत्तियों के बोधक होते हैं। ऊँ, ए, ओ आदि।

जा + ऊँ + गा।

जा + ए + गा।

जा + ओ + गे।

जा + इए + गा।

भविष्य के दो भेद—निकटवर्ती और दूरवर्ती। दूरवर्ती भविष्य के उदाहरण ऊपर हैं। निकटवर्ती भविष्य की रचना के लिए कोई स्वतंत्र क्रिया रूप नहीं चलता। जा रहा है, जाता है, वर्तमानकालिक क्रियारूपों का लाक्षणिक प्रयोग कर दिया जाता है। यथा—

वह काशी जा रहा है (एकदम निकट भवि०)

मैं अभी जाता हूँ। (जा रहा हूँ—जाऊँगा)

अब वृत्तियों और वृत्तिबोधक प्रत्ययों का वर्णन किया जायेगा। वृत्तिबोधक प्रत्ययों का वर्णन करने के पूर्व वृत्तियों पर थोड़ा विचार कर लेना चाहिए। 'वृत्ति' शब्द भ्रम पैदा करने वाला है। वास्तव में क्रियारूपों से वृत्तियों की स्पष्ट और निश्चित अभिव्यक्ति नहीं होती। 'वृत्ति' का तात्पर्य है

मनस्स्थिति । भाषा में प्रत्येक मनस्स्थिति को प्रकट करने के लिए एक-एक क्रियारूप की कल्पना नहीं की जा सकती । मनोवृत्तियाँ अनन्त हैं । अतः उनको व्यक्त करने के लिए अनन्त क्रियारूपों की आवश्यकता होगी । किंतु भाषा में यह सम्भव नहीं है । अतः क्रियारूप किसी अमुक मनस्स्थिति का सूचक नहीं होता, बल्कि विभिन्न मनोवृत्तियों के फलस्वरूप होने वाली किसी एक विशिष्ट प्रवृत्ति (टेन्डेन्सी) का सूचक होता है । उदाहरण = जाओ क्रिया रूप से आज्ञा, क्षोभ, याचना अनेक मनोवृत्तियों की अभिव्यक्ति हो सकती है । किंतु प्रवृत्ति एक है, किसी को जाने के लिये कहना ।

मनोवृत्तियाँ दो प्रकार की होती हैं :—तटस्थ और विधानात्मक । पहले को विचारमूलक और दूसरे को इच्छामूलक कह सकते हैं । विचारमूलक मनस्स्थिति में वक्ता किसी वस्तु का विधान नहीं करता । वह मुख्यतः आत्म-केन्द्रित होता है । संदेह, जिज्ञासा, संभावना आदि वृत्तियाँ उसके मनोजगत में चलती रहती हैं । विचारमूलक या तटस्थ मनोवृत्तियों का उदाहरण निम्नलिखित गद्यखण्ड में देखिए :—

“मैं चाहता हूँ, कल चला जाऊँ । कदाचित् रात पानी बरसने लगे । वह भी आता होगा । यदि न आता तो अच्छा था । कच्चा रास्ता बड़ा खराब होता है । कहीं मोटर फँस न जाय । फँस गयी तो बाहर पहुँचना कठिन होगा ।”

उपर्युक्त गद्यखण्ड को वक्ता एकांत में भी कह सकता है और मध्यम पुरुष के सामने भी । ऊपर जो वृत्तियाँ (संभावना, संकेत, शर्त) आयी हैं, उन सब को उत्तम पुरुष केन्द्रित कहा जा सकता है ।

विधानात्मक मनस्स्थिति में वक्ता किसी वस्तु का विधान करता है । इसीलिए मध्यम पुरुष की उपस्थिति अनिवार्य होती है । इसको मध्यम पुरुष केन्द्रित कहा जा सकता है । उदाहरण—

आ, ए टूटे हुए हृदय ! आज तेरे टुकड़ों को जमा करके एक समाधि बनाऊँ, और अपने शोक को उसके हवाले कर दूँ । ओ रोने वाली आँखें, आओ और मेरे आँसुओं को अपनी विहसित छटा में छिपा लो । आओ मेरे आभूषणों ! मैंने बहुत तुम्हारा अपमान किया, मेरा अपराध क्षमा करना । तुम मेरे भले दिनों के साथी हो । इस संकट में मेरा साथ दो, मगर देखो, दगा न करना, मेरे भेदों को छिपाये रखना । ’

इस प्रकार तटस्थ वृत्तियों के अन्तर्गत तीन वृत्तियाँ आती हैं:—संभावना, शर्त, सौर संकेत । विधानात्मक मनोवृत्ति के अन्तर्गत एक आती है—विधि।

हिन्दी में इस प्रकार चार वृत्तियाँ स्वीकार्य हैं:—

विधि, संभावना, शर्त, संकेत, ।

विधि:—

विधि को प्रकट करने वाले प्रत्यय—

१— ओ

२— शून्य

३— ना

४— इए—गा

५— एं

‘ओ’ का प्रयोग मध्यम पुरुष ‘तुम’ के साथ ।

तुम देख् + ओ, पढ़् + ओ, सुन् + ओ ।

शून्य का प्रयोग मध्यम पुरुष ‘तू’ के साथ ।

तू—आ सुन जा ।

ना— का प्रयोग ‘तुम’ और ‘तू’ दोनों के साथ किंचित दूरवर्ती भविष्य को प्रकट करने के लिए ।

तुम आ + ना, जा + ना, सुन + ना ।

तू आ + ना, जा + ना, सुन + ना ।

इए का प्रयोग मान्य पुरुष ‘आप’ के साथ ।

आप आ + इए, जा + इए, पढ़् + इए ।

‘इए’ के साथ ‘गा’ लगा कर किंचित दूरवर्ती भविष्य को भी प्रकट करते हैं ।

आप आ + इए + गा, जा + इए + गा,

पढ़् + इए + गा,

एं— का प्रयोग भी मान्य पुरुष ‘आप’ के साथ होता है ।

आप आ + एं, समझ + एं, पढ़ + एं

इस प्रकार विधानात्मक वृत्ति विधि में ‘तुम’, ‘तू’ और ‘आप’ को सम्बोधित किया जाता है । अन्य पुरुष अनुपस्थित रहता है । अतः उसके लिए यहाँ

कोई व्यवस्था नहीं है। उत्तम पुरुष धक्का होता है, वह स्वयं को संकेत दे सकता है, विधि नहीं। इसलिए—आऊँ, चलें (हम)—जैसे रूपों को संकेत में रखा गया है।

संभावना—

संभावना को प्रकट करने के लिए निम्नलिखित मुक्त रूपों की सहायता ली जाती है। 'शायद', 'होगा'।

यहाँ यह ध्यान में रख लेना चाहिए कि संभावना को प्रकट करने वाले क्रियारूपों से अनिवार्य रूप से पुरुष की अभिव्यक्ति नहीं होती। साथ ही यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि वृत्तियों के बोधक क्रियारूपों से अनिवार्य रूप से कालों की अभिव्यक्ति नहीं होती। कहीं कालों की अभिव्यक्ति क्रियारूपों से ही जाती है, और कहीं सन्दर्भ से। जैसे, शायद वह आए। यहाँ क्रियारूप से ही भविष्य का संकेत भी मिल जाता है। किंतु यह उदाहरण देखिए—

अब तक उड़कर न जाने कहाँ पहुँचता (भूत)

मैं इतना संगीत-प्रेमी नहीं हूँ, वरना आज फारस में सितार की ताने सुनता। (वर्तमान)

'पहुँचता' और 'सुनता' में काल को प्रकट करने की क्षमता नहीं है। रचना की दृष्टि से भी। किंतु काल सन्दर्भ पर आश्रित है।

संभावना को प्रकट करने के लिए ऊपर दो शब्दों का उल्लेख किया गया। इन शब्दों के प्रयोग से संभावना की अभिव्यक्ति इस प्रकार होती है।

१—संभावना वर्तमान पूर्ण को प्रकट करने के लिए वर्तमान पूर्ण क्रियारूप (गया है, आया है) के साथ वाक्य में शायद का प्रयोग करते हैं। 'शायद' के प्रयोग का क्रिया पर प्रभाव पड़ता है—'है' का 'हो' हो जाता है।

वह आया है।

शायद वह आया हो।

आपने यह बात सुनी है।

आपने यह बात शायद सुनी हो।

२—संभावना वर्तमान अपूर्ण को प्रकट करने के लिए वर्तमान अपूर्ण क्रियारूप (आ रहा है, जा रहा है) के साथ वाक्य में 'शायद' का प्रयोग करते हैं, और क्रिया पर इसका प्रभाव पड़ता है—है का हो।

वह आ रहा है ।

शायद वह आ रहा हो ।

आप आ रहे हैं ।

शायद आप आ रहे हों ।

यही संभावना वर्तमान अभ्यास में समझना चाहिए । यों अभ्यास और अपूर्ण अवस्था में कोई मौलिक भेद क्रियारूपों से अभिव्यक्त नहीं होता । 'ता' का प्रयोग अभ्यास और अपूर्ण दोनों के लिए पाया जाता है ।

वह आता है

शायद वह आता हो । (अभ्यास और अपूर्ण दोनों)

जिस प्रकार वर्तमान पूर्ण, अपूर्ण और अभ्यास क्रियारूपों में 'शायद' लगाकर संभावना वर्तमान पूर्ण, अपूर्ण, अभ्यास क्रियारूपों की निष्पत्ति होती है, उसी प्रकार भूतकाल में भी समझना चाहिए । केवल थोड़ा सा अन्तर है । संभावना भूत में 'शायद' का प्रयोग करने पर भी क्रिया में कोई परिवर्तन नहीं होता है, जबकि वर्तमान में 'है' का 'हो' हो जाता है । उदाहरण—

वह आता था ।

शायद वह आता था । (आता थे या थो नहीं)

वह आ रहा था ।

शायद वह आ रहा था ।

वह आया था ।

शायद वह आया था ।

यही बात भविष्य के बारे में है—

वह आएगा ।

शायद वह आएगा ।

विधि और संकेत के सूचक प्रत्ययों के साथ 'शायद' का प्रयोग करके भी संभावना प्रकट की जाती है ।

शायद तुम आओ ।

शायद आप आएँ ।

शायद मैं आऊँ ।

शायद हम चलें ।

शायद वह आए ।

‘शायद’ के अतिरिक्त ‘होगा’ का प्रयोग भी होता है—

वह आता होगा (संभा० वर्त० अभ्यास—अपूर्ण दोनों)

वह आ रहा होगा (संभा० वर्त० अपूर्ण)

वह आया होगा (संभा-वर्त-पूर्ण)

वह आता रहा होगा (संभा० भूत० अभ्यास + अपूर्ण)

वह आया होगा } (संभा० भूत० पूर्ण)
आया रहा होगा }

‘आया होगा’ का काल निर्णय सन्दर्भ पर आश्रित है ।

भविष्य में हम यहाँ टहलते होंगे (भवि० संभावना)

शतं—

‘शतं’ को प्रकट करने के लिए ‘यदि’ और ‘तो’ का स्पष्ट उल्लेख या इनसे प्रभावित वाक्य रचना आवश्यक होती है ।

शतं, भविष्य—

(यदि) मैं आऊँ तो ऊँ

(यदि) वह आए तो ए

(यदि) तुम आओ तो ओ

(यदि) वह आया तो —या

(यदि) वह आएगा तो, एगा

(यदि) वह आता है तो—ता है

शतं, वर्तमान पूर्ण—

(यदि) वह आया है तो

आया हो तो

आता है तो

आता हो तो

आ रहा है तो

आ रहा हो तो

“ है ” का ‘हो’ हो जाना विकल्प पर निर्भर करता है ।

शर्त, भूत (पूर्ण अपूर्ण आदि) —

(यदि) वह आया था तो

(यदि) वह आता था तो

(यदि) वह आरहा था तो

यहाँ 'था' में कोई परिवर्तन नहीं होगा। शर्त भूत की रचना 'होता' की सहायता से भी हो सकती है।

यदि उसने बुलाया होता तो

शर्त को प्रकट करने वाली कुछ रचनाएँ ऐसी हो सकती हैं जो सन्दर्भ के अनुसार काल का बोध कराएँ।

यदि वह आता तो मैं चला जाता।

यह भूत, भविष्य दोनों में प्रयुक्त हो सकता है। इस वाक्य को यदि इस प्रकार कहें तो काल निश्चित हो जाता है।

जब तक वह नहीं आता, मैं नहीं जाता।

भविष्य में प्रयुक्त है।

यदि कल (बीता हुआ) वह आता तो मैं चला जाता।

यह भूत में प्रयुक्त है।

इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार के क्रियारूपों से भी 'यदि' और 'तो' की सहायता से शर्त की अभिव्यक्ति हो सकती है —

जाना हो तो

जाना था तो, आदि।

यह द्रष्टव्य है कि संभावना की भाँति शर्त की अभिव्यक्ति में भी पूरी वाक्य रचना प्रभावित होती है। केवल क्रियारूप में परिवर्तन करने से इनकी अभिव्यक्ति सदा नहीं हो सकती। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि क्रियारूपों में संभावना और शर्त को प्रकट करने की शक्ति नहीं होती।

संकेत —

संकेत की अभिव्यक्ति के लिए 'कहीं' 'चाहे,' 'क्यों,' 'तो,' के अतिरिक्त ए, एं, हो, ता, या, ऊँ, ओ, इए, प्रत्ययों की सहायता ली जाती है।

'ए' अन्य पुरुष के साथ —

जहाँ से आवाज आए, वहाँ चलो।

अब हम यहाँ जाएँ-एँ का प्रयोग प्रथम पुरुष के साथ

‘ओ’ का प्रयोग मध्यम पुरुष

‘इए’ का प्रयोग मध्यम पुरुष—आदरार्थक

‘ऊ’ का प्रयोग उत्तम पुरुष—

तुम चाहे जितना कमाओ, पूरा नहीं पड़ेगा ।

कहीं तुम चले न जाओ ।

कितना ही क्यों न कहिए, कोई फरक नहीं पड़ेगा ।

मैं जाऊँ ।

‘ता’ ‘या,’ और ‘हो’ का प्रयोग निम्न प्रकार से होता है :—

मैं यथार्थ में अभागिनी हूँ, नहीं तो क्या भगवान मेरी कोख में लड़कियाँ ही रचते । (संकेत-नित्य)

उसके आँसू कैसे पुँछते ।

उसने विश्वविद्यालय में शिक्षा पाई नहीं, फिर सभ्यता कहाँ से आती ।

‘या’ का प्रयोग

जरा-सी हवा चली, कि बादल फटे

जब पुराना होते देखा, बबल दिया ।

ओला पत्थर से बची तो फसल खलिहान में आयी ।

जिसने विद्या पढ़ी हो ।

‘हो’ के प्रयोग देखिए:—

जिसका बालक मर जाता हो ।

जहाँ से आवाज आती हो ।

वह जितना भी अच्छा हो ।

‘ता’ के अन्य प्रयोग:—

नशा उतरता तो वह रोने लगती ।

वह कभी गिर भी नहीं पड़ता ।

संकेत के अन्य उदाहरण:—

वे अवसर पाकर क्यों चूकने लगे ।

उसको जाना चाहिए ।

इस प्रकार वृत्तियों की चर्चा समाप्त होती है । विधि के अतिरिक्त अन्य वृत्तियों की अभिव्यक्ति के लिए वाक्य रचना की सहायता ली जाती है । उनको अभिव्यक्त करने के लिए प्रायः कोई भिन्न क्रियारूप नहीं मिलेंगे ।

पुरुष की अभिव्यक्ति वृत्तिबोधक क्रियारूपों से होती है। इसके अलग वर्णन की आवश्यकता नहीं। वचन और लिंग से क्रिया रचना में कोई जटिलता नहीं आती। अब केवल वाच्य पर कुछ कहना है।

वाच्य की अभिव्यक्ति के लिए हिंदी में कोई प्रत्यय नहीं है, बल्कि इसके लिए स्वतंत्र शब्दों का प्रयोग किया जाता है। प्रयुक्त होने वाले शब्दों में जाना, पढ़ना, देना, और बनना हैं। इनकी सहायता से वाच्य परिवर्तन होता है। इस सन्दर्भ में इन शब्दों को वाच्य बोधक प्रत्यय ही समझना चाहिए। बिना इन शब्दों की सहायता के केवल भूतकालिक सकर्मक क्रिया में वाच्य परिवर्तन हो जाता है।

उसने किताब पढ़ी (कर्म वाच्य)

उसने ग्रन्थ पढ़ा (कर्म वाच्य)

ऐसे वाक्यों में कर्म के साथ 'को' लगा देने से भाववाच्य बन जाता है।

उसने मोहन को मारा। (भाव वाच्य)

सीता को मारा।

भाव वाच्य में जहाँ असमर्थता व्यक्त की जाती है, वहाँ 'जाना से' सहायता ली जाती है।

उठा नहीं जाता।

पढ़ा नहीं जाता।

हिंदी में जिनको संयुक्तक्रिया (काँप उठता है, सो जाता है, जा रहा है, सोने लगता है आदि कहते हैं, वे संयुक्त क्रियाएँ भी व्यापार की दृष्टि से दो प्रकार की हैं। सहायक क्रिया से कहीं मूल क्रिया के अर्थ में थोड़ा परिवर्तन, परिवर्धन होता है, और कहीं उसका अर्थ एकदम बदल जाता है।

उदाहरण—

वह काँपता है।

वह काँप उठता है।

उसने देखा

उसने देख लिया।

उठाया — उठा दिया।

पढ़ा — पढ़ डाला ।
गिरेगा — गिर पड़ेगा ।

काँप उठता है, देख लिया, उठा दिया, पढ़ डाला, गिर पड़ेगा क्रियारूप क्रमशः काँपता है, देखा आदि क्रियारूपों से बहुत भिन्न अर्थ नहीं रखते । किंतु निम्नलिखित उदाहरणों पर ध्यान दीजिए :—

वह गाना गाता है ।
गाना गाया जाता है ।
वह देखता है ।
वह दिखायी देता है ।
वह जाता है ।
वह जाने पाता है ।
वह उगलता है ।
उसे उगलना पड़ता है ।
वह जाता है ।
उसे जाना होगा ।

यहाँ गाया जाता है, दिखायी देता है, जाने पाता है, उगलना पड़ता है, जाना होगा, क्रियारूप क्रमशः गाता है, देखता है, जाता है, उगलता है आदि से एकदम भिन्न अर्थ प्रकट करते हैं, और वाक्य रचना पर प्रभाव भी डालते हैं ।

अब वाच्य परिवर्तन में सहायक जाना, पड़ना, देना, और बनना का एक-एक उदाहरण दिया जाता है :—

गाना गाया जाता है ।
तारे रात में दिखायी पड़ते हैं ।
उल्लू को दिन में कुछ नहीं दिखायी देता ।
मुझसे ये सब बातें कहते नहीं बनतीं ।

हम ऐसे स्वतंत्र शब्दों को, जिनका प्रयोग विशिष्ट अर्थों के द्योतन के लिए अनिवार्य रूप से होता है, प्रत्ययधर्मी कह सकते हैं ।

जाना, पाना, पड़ना, रहना, देना, बनना, लगना, होगा प्रत्ययधर्मी शब्द हैं । 'हुआ' 'ही' भी प्रत्ययधर्मी हो सकते हैं । कर भी ।

जाते ही । जा कर
जाता हुआ । खा कर

एक धातु का अनेक सन्बन्धों में प्रयोग :—

अकड़ना वह शीत से अकड़ गया ।
थोड़े पैसे पर ही वह इतना अकड़ रहा है ।

आना वह रोज हमारे यहाँ आता है ।
ये जूते उसके पैर में नहीं आएंगे ।
पचास-साठ रुपये में यह सामान आ जाएगा ।
उसको बुखार आता है ।
उसको खाँसी आती है ।
प्यार आया ।
गुस्सा आया ।
बड़ा मजा आया ।
याद आती है ।
शरम आती है ।
वह प्रथम श्रेणी में आएगा ।
वह हमेशा अव्वल आती है ।
प्राचीन युग से जब हम आधुनिक युग में आते हैं ।
मेरा तुम्हारे ऊपर कुछ नहीं आता ।
उसको सितार बजाना आता है
पढ़ना आता है ।
जी में आता है, उसको छोड़ दूँ ।
इस पौधे में फूल नहीं आये ।
पुस्तकों में जितने नाम आये हैं ।
आये दिन
आइए, दो-दो हाथ हो जाय ।
जो आफत आनी हो, आए ।
आओ, हम तुम्हारी दावत करें ।
उससे तंग आ गया हूँ, इसलिए वहाँ नहीं जाता ।
मौज में आकर कुछ का कुछ न कर बैठना ।
व्यवहार में आनेवाली वस्तुएँ अलग रखो ।
उसके सम्पर्क में मैं नहीं आया ।

किसी की बात में मत आना ।

वह मेरे हाथ में आ चुका है ।

उखाड़ना उसने यह पेड़ उखाड़ दिया ।

बहस में वकील ने सब गवाहों को उखाड़ दिया ।

बेटे की मौत से उसका घर उखड़ गया ।

उठना वह पाँच बजे सोकर उठता है ।

यह प्रश्न मेरे मन में बहुत दिनों से उठ रहा है ।

यदि वह मेहनत करेगा तो ऊपर उठ जाएगा ।

उसके मन में उमंगें उठ रही थीं ।

बात उठते ही वह चला गया ।

आधुनिक युग में छुआछूत का भेद उठ गया ।

उठाना गिरी हुई किताबों को उठा लो ।

भूठ मनुष्य को उपर कभी नहीं उठा सकता ।

उसकी बात मत उठाओ ।

वह मेरे सामने आँखें नहीं उठाता ।

सिर नहीं उठता ।

उसने बड़ा कष्ट उठाया ।

पारिश्रमिक का प्रश्न न उठाया जाय ।

तुम्हारे लिए मैंने कुछ उठा नहीं रखा ।

उड़ना पक्षी उड़ते हैं ।

देखते ही देखते उसकी सम्पत्ति उड़ गयी ।

आज तीस साल उड़ गये ।

उड़ाना बच्चे पतंग उड़ाते हैं ।

उसने शराब में सारी सम्पत्ति उड़ा दी ।

उसका मजाक उड़ाया जाता है ।

उतारना ऊपर से सामान उतार लो ।

उसने आरती उतारी ।

इस कविता को कापी पर उतार लो ।

- इस सिद्धांत को अपने जीवन में उतार लो ।
- ऐंठना बैठकर तुम रस्सी ऐंठो ।
आजकल वह बहुत ऐंठता है ।
- कटना जीवन नहीं कटता ।
कागज नहीं कटता ।
- जाड़ा
समय
दिन
रास्ता } कैसे कटेगा
- दस रुपये लिखाई कट गये ।
इसके उत्तरों से बड़े विद्वान कट जाते हैं ।
- कमाना वह खूब पैसा कमाता है ।
उसने खूब नाम कमाया ।
वह रोटी कमाने कलकत्ता चला गया ।
- कसना कस कर बाँधो ।
कस कर काम करो ।
कमर कस कर तैयार हो जाओ ।
- कहना वह सबको भला बुरा कहता है ।
कहते हैं, प्राचीन काल में मधु-कैटभ नामक दो राक्षस थे ।
कहिए कि बाजी मार लीया ।
अब कहिए, क्या विचार है ।
कहा जाता है, एक बार राजा दशरथ शिकार खेलने निकले ।
- काटना वह लकड़ी काट रहा है ।
वह दोपहरी काट रहा है ।
वर अच्छा है, घर-बार भी काटने योग्य नहीं है ।
अपने से बड़ों का वचन मत काटो ।
आपको भला कौन काट सकता है ।
कहाँ चक्कर काट रहे हो ।

खाना वह फल खाता है ।
हमारा उनका मेल नहीं खाता ।
वे मार खाते हैं ।

वह { ठोकर खाकर
चोट खाकर तिलमिला उठा ।
थप्पड़ खाकर

वह चक्कर खाकर गिर पड़ा ।
घुड़कियाँ खाने या घक्के खाने में नहीं आया हूँ ।
रिश्वत खाने वाले कभी नहीं पनपते ।
सुबह हवा खाने जाया करो ।
वह नदी में गोते खा रहा है ।
वह जाड़े में सर्दी खा गया ।
कसम मत खाओ ।
बैंत खाने से अच्छा है, भाग जाना ।
गाली खाना ।

खिलना फूल खिल गया ।
उसको देख कर सब लोग खिल उठे ।

खींचना वह गाड़ी खींचता है ।
वह सुन्दर चित्र खींचता है ।
जरा खींचकर गाओ ।

खुलना उसकी नींद खुल गयी ।
वहाँ एक अच्छी दुकान खुल गयी ।
तुम्हारे लिए हमारे घर का दरवाजा हमेशा के लिए
खुला है ।

खेलना जुआ खेलना बुरा व्यसन है ।
लोग शिकार खेलने गये हैं ।
युद्ध के मैदान में वह जान पर खेल गया ।

खोना उसने किताबें खो दीं ।
धीरज खो देने से काम नहीं बनेगा ।

- खोलना इस घटना ने आंखें खोल दीं ।
 उसने दरवाजा खोल दिया ।
 उसने आजकल एक दवाखाना खोल लिया है ।
 इस गाँठ को खोल दो ।
 अपना अभिप्राय खोलकर बताओ ।
- गरमाना उसने दूध गरमाया ।
 यह घटना लोगों को गरमा देने वाली है ।
- गलना पुरी पश्चात्ताप से गला जा रहा था ।
 बर्फ गलने लगी ।
- गिरना वह धन पर गिर गया ।
 वह फिसल कर गिर पड़ा ।
- गुजरना वह रोज इधर से ही गुजरता है ।
 देखते ही देखते दिन गुजर गये ।
 दस रुपये में गुजर नहीं होती ।
 उसकी माता तब तक गुजर चुकी थी ।
 उसके दिल पर न जाने क्या गुजरा होगा ।
- घुटना वह घुट-घुट कर मर गयी ।
 रोज भाँग घुटती थी ।
- घुलना वह शोक में घुलता जा रहा है ।
 वह हम में घुल मिल गया ।
- घुमाना उसने मोटर घुमा दी ।
 उसने बात घुमा दी ।
- घोटना उसका गला घोट दिया गया ।
 उसने सारा पाठ घोट डाला ।
- चढ़ना वह पेड़ पर चढ़ता है ।
 जब बारात दरवाजे पर चढ़ी, तो.....
 चढ़ते हुए यौवन काल में उत्साह बहुत अधिक होता है ।
 जब दिन चढ़ आता है, तब वह सोकर उठता है ।

वह प्याले पर प्याले चढ़ाता था ।
 वह धोती चढ़ाये हुए आया ।
 गाड़ी पर सामान चढ़ाया गया ।
 उसने मूर्ति पर फूल चढ़ाये ।

चलना काम नहीं चलेगा ।
 खींचतान चल रही है ।
 हमारे साथ चाल मत चलो ।
 कारखाना खूब चलता है ।
 पता चल गया ।
 चोर की उजाले में नहीं चलती ।
 चर्चा चली ।
 तो वो चले हैं, सरकार का विरोध करने ।
 उसका नाम चल रहा है ।
 वह पैदल चलता है ।
 उसका आधा चला जाता है ।
 मोहन पर उसका हाथ कैसे चला ।
 उस पर मुकदमा चलने लगा ।

चलाना भूख की कौन चलाये ।
 वह मोटर चलाता है ।
 उन्होंने नया सवत् चलाया ।
 नाना विषयों पर उसने लेखनी चलायी है ।
 आजकल वह दुकान चला रहा है ।
 इसी में काम चलाओ ।

चुनना चुने हुए लोग आयेंगे ।
 टेबुल पर खाना चुना जा रहा था ।

छिड़ना बात छिड़ गयी ।
 तान छिड़ गयी ।
 युद्ध छिड़ गया ।

छूटना मोटर छूटने का समय हो गया ।
 छूटते ही पूछ बैठते हैं ।

- छेड़ना किसी को छेड़ना ठीक नहीं ।
आप चौताल छेड़ दीजिए ।
- छोड़ना तुमको हम बता कर छोड़ेंगे ।
वह पिचकारी छोड़ता है ।
उसकी बात छोड़िए ।
उस पर प्रभाव छोड़ते रहे हैं ।
- जगाना सुबह मुझको जगा देना ।
उसने उत्सुकता जगा दी ।
- जड़ना गहने में मोती जड़े हुए हैं ।
उसने एक तमाचा जड़ दिया ।
- जमना पानी जमकर बर्फ हो गया ।
वे जमकर विचार कर रहे हैं ।
महफिल जमी हुई थी ।
उसकी धाक जम गयी ।
दुश्मनों के पैर मत जमने देना ।
भिगोया हुआ चना जम गया है ।
- जमाना उसने लाठियाँ जमायीं ।
वह अपनी प्रैक्टिस जमा रहा है ।
वह मुझ पर आँख जमाये हुए था ।
- जलना बत्ती जल गयी ।
किसी को देख कर मत जलना ।
- जलाना उसने भट्ठी जलायी ।
बातों से मत जलाओ ।
- जानना ईश्वर जानता है कि
वह कई विषय जानता है ।
- जाना उस ओर ध्यान नहीं जाता ।
गाँठ से क्या जाता है ।
यह परम्परा अभिनवगुप्त तक जाती है ।

इसकी ऊँचाई साठ फुट तक जाती है ।
दो-ढाई घंटों की दौड़ के बाद जाकर वह पकड़ा गया ।

जुटाना सामग्री जुट जाती है ।
वह काम करने में जुट गया ।

जुड़ाना दूध जुड़ा गया ।
आँखें जुड़ा गयीं ।

जोड़ना हिसाब जोड़ लो ।
उसने रस्सी जोड़ दी ।
हाथ जोड़कर उसने कहा ।
घर जोड़ने की माया से दूर रहो ।

भुंकना डाल फल के भार से भुंकती है ।
फल पाने की आशा से वह इधर भुका है ।
किसी के सामने भुंकना नहीं ।

भुकाना वे ईश्वर के चरणों में शीश भुकाते हैं ।

टूटना घड़ी टूट गयी ।
उसकी नींद टूट गयी ।
उसकी प्रतिज्ञा नहीं टूटेगी ।
उस पर डाकू टूट पड़े ।

टेकना उसने माथा टेक दिया ।
उसने लड़ाई के मैदान में घुटने टेक दिये ।
वह लाठी टेकता हुआ आया ।

ठहरना वह सराय में ठहरा ।
कल खाने की कैसे ठहरेगी ।
वह तो सीधा आदमी ठहरा ।

ठहराना उसको होटल में ठहराया गया ।
उसको मुखिया ठहराया गया ।

डालना उसने इस भवन की नींव डाली ।
वह प्रभाव डालता है ।

दूध में पानी डाल दिया ।
 यह काम मास्टर जी पर डाल देना ।
 उसे बन्धन में मत डालो ।
 रुकावट मत डालो ।

डूबना चन्द्रमा डूब गया ।
 बालक तालाब में डूब गया ।
 माँ बच्चों में डूब जाती है ।

तोड़ना उसने छड़ी तोड़ दी ।
 शर्त मत तोड़ना ।
 तुमने उसकी नींद तोड़ दी ।

दबना वह किसी से दबने वाला नहीं है ।

निकलना चाँद निकल आया ।
 यह चावल सत्रह मन निकला ।
 वह ईमानदार निकला ।
 कालेज से निकलने के बाद लोग नौकरी करते हैं ।
 कितने दिनों की यात्रा पर निकले हो ।
 जिधर को वह निकल जाता, उमका स्वागत होता ।
 लाटसाहवी निकल जायेगी ।
 उसने निकल भागने का प्रयास किया ।
 उसके दो लेख निकल चुके हैं ।

निकालना एक उपाय निकालो ।
 मुँह से एक शब्द न निकालो ।
 एक पत्रिका निकालनी है ।

पकड़ना रास्ता पकड़कर चलना चाहिए ।
 बात जड़ पकड़ गयी है ।

पचाना बात कौन पचा सकता है ।
 रुपये कौन पचा सकता है ।
 वह चने पचा सकता है ।

पड़ना	बच्चों पर डाँट पड़ेगी । किसी चीज की कमी नहीं पड़ेगी । उसका मकान रास्ते में पड़ता है । भगड़े में मत पड़ो ।
पहुँचना	वह शरण में पहुँचा । वह आखिर नतीजे पर पहुँचा । किताबों की संख्या सौ तक पहुँच गयी ।
पीटना	वह महीने में दो-ढाई सौ रुपये पीट लेता है ।
पीना	वह सिगार पीता है । वह हुक्का पीता है ।
पीसना	वह चक्की पीसता है । वह आटा पीसता है ।
फटना	उसका पायजामा फट गया । पौ फटते-फटते आ जाना । शोर से कान फट रहे हैं ।
फाड़ना	गला फाड़ कर मत चिल्लाओ । नेत्र फाड़कर क्या देख रहे हो ? किसको निगलने को मुँह फाड़ रहे हो ?
फूटना	बरतन फूट गये । सुबह किरणें फूट गयीं । अंकुर फूट गये हैं । वह फूट-फूट कर रोता है । उसके भाग्य फूट गये हैं ।
फूलना	कमल फूल गये । वह फूला नहीं समाता ।
फैलाना	उसने दूध फैला दिया । उसने बात फैला दी ।

बढ़ना	भूख बढ़ गयी है । सेना बढ़ रही है । पाप से कोई बढ़ नहीं सकता ।
बढ़ाना	वह दुकान बढ़ाता है । बात मत बढ़ाओ । दोस्ती बढ़ानी चाहिए । आप आकर घर की शोभा बढ़ाइए ।
बहना	पानी बह रहा है । हवा बह रही है । खून बह रहा है । नाक बह रही है ।
बहाना	वह पानी बहाता है । वह रोज आंसू बहाता है ।
बँटाना	वे दूसरों के काम में हाथ बँटाते हैं ।
बाँधना	टकटकी बाँधकर मत देखो । भुँड बाँधकर कहाँ जा रहे हो ।
बिगड़ना	दूध बिगड़ गया । मोहन मुझ पर बिगड़ गया । वाराणसी बिगड़कर बनारस हो गया ।
बुझना	दीपक बुझ गया । मेरी प्यास बुझ गयी ।
बैठना	मोहन चटाई पर बैठ गया । निशाना बैठ गया । उसका मन इस पुस्तक पर बैठ गया । आजकल वह बैठकर खा रहा है ।
भरना	घड़े में पानी भर दो । वह किस प्रकार अपना पेट भरता है ।

वह हर बात में हमी भर देता है ।
तुम्हारी कोमल बातें धाव भर देती हैं ।

मारना वह कुत्ते को मारता है ।
वह लाज के मारे नहीं आता ।
उसने पचास रुपये मार लिये ।
उसने फंकी मार ली ।

मिटाना उसने तसवीर मिटा दी ।
आप ने भूख मिटा दी ।

मिलना उसे किताब मिल गयी ।
हिसाब ठीक-ठीक नहीं मिल रहा है ।
मोहन का मुख सोहन से मिलता है ।
वह मुझसे बड़े प्रेम से मिला ।
सबने मिलकर यह काम किया ।

मिलाना उसने सुर मिलाया ।
उसने हाथ मिलाया ।
सब मिलाकर मैंने यह देखा ।

लगना उसे प्यास लग गयी है ।
इस लता में फूल नहीं लगते ।
चोट लग जायेगी ।
यह पेड़ अब लग गया है, नहीं उखड़ेगा ।
इस काम में दस रुपये लग गये ।
जेठ लग गया है ।
काम में लग जाओ ।
मुझे ऐसा लग रहा है कि वह नहीं आयेगा ।

लगाना महात्मा लोग टीका लगाते हैं ।
उसने बड़ी कठिनाई से पता लगाया ।
वह काम में मन लगाती है ।
जोर लगाकर देखो ।

बड़ी-बड़ी बाजियाँ लगायी जाती थीं ।
उसने बगीचे में आम के पेड़ लगाये हैं ।

लटकाना मुँह क्यों लटकाये हो ?
उसने खूँटी से छाल लटका दिया ।

लेना उसने किताब ली ।
रघु से लेकर दशरथ तक सब के नाम गिनाये ।
इन विषयों को लेकर बात करो ।
उसको साथ लेकर चलो ।

धातुएँ और उनके संभावित रूप

आ—ना (अकर्मक)

आ— (—ऊँ, —ऊँगा, —ऊँतो,)

आ— (—ये, —येगी, —ये तो)

आ— (—ती है, —ता था, —ता, —ता हो, —ता है तो—ता तो,
—ता हुआ, —ता जाना —ता रहना —ता होगा)

आ— (—या, — या है, — या था, — या हो, —या तो,— या हुआ,
—या करना,— या होगा, —ये बिना, —ये दिन,—या जाना,)

आ— (विधि, —कर, —गिरना,— चुकना, —जाना, —निकलना,
—पड़ना, — पहुँचना, — बसना, — बैठना, — मिलना,
—रहना, —सकना,)

आ— (—इए, —इए गा,)

आ— (— ना, — ना हो, — ने पर, — ना था, — ने वाला,—
ने देना, —ने पाना, — ने लगना, — ने के लिए,—ना है,—
ना चाहिए, —ना पड़ा)

आ— (—ओ)

आ— (— ते ही, — ते आते, — ते समय,)

जा—ना (अकर्मक)

ग— (—या, —या था,— या है, — हो, — या होता)

रात (गये)

जा— (— या जाना)

अन्य आकारान्त अकर्मक क्रियाओं की रचना इसी प्रकार होगी ।
आना, जाना आदि

आकारान्त सकर्मक क्रियाएँ

उठा — ना

उठा—(—ऊँ,—यें,—ऊँगा,—एगा,—ओ,—ओगे—ऊँ —यें—ओ तो
—इए,)

उठा—(—ता,—ता है, ता था,—ता तो,—ता होगा,—ता फिरना)

उठा—(या, —या है, —या था, या हो, —या तो, —या हुआ,
—या करना,—या होगा,—ये बिना,—या जाना)

उठा—(—कर,—विधि,—पाना,—देना,—फेंकना,—रखना,—लेना,
—लाना,—सकना)

उठा—(—ना,—ना चाहता,—ने का,—ना पड़ना,—ने वाला,—ने
गना,—ना था,—ना चाहिए—ना होता है,—ने देना,)

उठा—(—ये जाना,—ये रहना,—ये रखना,—ये देना,—ये होना,
—ये बिना,—ये लेना,)

उठा—(—ते समय,—ते ही,—ते उठाते)

आकारान्त सकर्मक क्रियाओं के रूप उपर्युक्त प्रकार के होंगे ।

पाना, पढ़ाना, वढ़ाना, बताना, बनाना, बुलाना, बैटाना, लगाना,
लाना, सजाना, समझाना आदि ।

व्यंजनान्त क्रियाएँ

उठ्—ना

उठ्—(—ती,—ती है,—ता था,—ता हुआ,—ती रहना,—ता तो,
—ता आना,—ता जाना,—ता रहना,—ता है तो,—ता फिरता है,)

उठ्—(—ए,—एगा,—ए बिना,—ओ,—ओगे,—इए—इएगा—ए तो,
—ओ तो —ऊँ,—ऊँ तो,—ऊँगा,—ए जाते हैं ।)

उठ्—(—कर,—आना,—जाना,—पड़ना,—बैठना,—सकना,—रहना,
—विधि,—चुकना,—लेना,—पाना)

उठ्—(—ते ही,—ते समय—ते उठते,—ते बैठते,—ते बनना)

उठ—(— ना, —ने का, —ने वाला, —ना चाहिए, —ने लगना,
—ना है, —ना था, —ना हो तो, —ना पड़ना, —ना चाहना, —ना
चाहिए, —ने जाना, —ने देना, —ने पाना,)

उठ—(—आ, —आ है, —आ था, —आ तो, —आ हुआ, —आ करना,
—आ नहीं जाता, —आ बैठी, —आ हो, —आ होगा)

देख, सुन, चल आदि व्यंजनांत धातुओं के किर्यारूप इसी प्रकार होंगे ।

ईकारान्त धातुएँ

पी—ना

पी—(—ऊँ, —ऊँगा, —ए, —ए बिना —जिए, —ओ)

पी—(—ता, —ता है, —ता था, —ते ही, —ते समय)

पी—पि (—आ, —आ था, —आ हो,)

पी—(—कर, —आना, —जाना, —रहना, —लेना, आदि)

पी—(—ना, —ना था, —ने का, —ने वाला, —ना चाहिए,
—ने लगना,)

ओकारान्त धातुएँ

रो—ना

रो—(—ये, —येगा, —ये तो, —ऊँ, —ओ,)

रो—(—ता, —ता है, —ता था, —ता तो, —ता हुआ, —ते बनना,
—ता रहना, —ते रोते, —ते ही, —ते समय)

रो—(—या, —आ था, —आ है, —आ चाहना, —आ जाना, —आ
हुआ, —आ करना, —आ होगा,)

रो—(—कर, —विधि, —पड़ना, —सकना, —रहना)

रो—(—ना, —ने की, —ने वाली, —ने लगना, —ने देना,
—ना चाहिए)

एकारान्त धातुएँ

दे—ना

दे—(—ती, —ती हैं, —ता था, —ता तो, —ता हुआ, —ता आना,
—ता जाना, —ता रहना, —ते समय, —ते ही,)

दे—दि(—आ, —आ था, —आ हो, —आ होता तो, —आ है तो,
—आ हुआ, —आ होगा, —आ करना, —आ जाना,
—आ है,)

दे—द(—ऊँ, —ऊँगा, —ईजिए, —ईजिएगा,)

दे—(—गा, —गा तो, —विधि, —तो, —कर, —आना, —जाना,
—देना, —पाना, —रखना, —रहना, —सकना,)

दे—(—ना, —ना दिलाना, —ना है, —ना होना, —ने वाला,
—ना चाहिए, —ने को, —ना चाहना, —ना पड़ना, —ने लगना,
—ना है तो, —ना हो,)

दे—द(—ओ, —ओ तो, —ओ गी, —ओ गे तो)

दे—द(—इलाएँ)

ऊकारान्त धातुएँ

छू—ना

छू—(—ती, —ता है, —ता था, —ता तो, —ते ही,)

छू—(—ए, —एगा, —विधि, —इए —इए गा,)

छू—छू (—आ, —आ हुआ, —आ तो, —आ जाना)

छू—(—कर, —ने की, —जाना, —देना, —ने लगी, —लेना,
—सकना,)

संयुक्त क्रियाएँ?

सीमित सामग्री के आधार पर संयुक्त क्रियाओं के बारे में जो निष्कर्ष निकले हैं, वे नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं। नयी सामग्री के प्रकाश में प्रस्तुत निष्कर्ष में परिवर्तन किया जा सकता है।

रचना के आधार पर हिंदी की संयुक्त क्रियाएँ सामान्य रूप से दो वर्गों में विभाजित की जा सकती हैं:—

१—मुख्य क्रिया और सहायक क्रियाओं की सहायता से बनने वाली संयुक्त क्रियाएँ।

२—संज्ञा या विशेषण से बनने वाली संयुक्त क्रियाएँ।

१.१ सहायक क्रियाओं से बनने वाली संयुक्त क्रियाएँ—

इस प्रकार की संयुक्त क्रिया का अधिक से अधिक जो विस्तार होगा, उसमें एक मुख्य क्रिया और चार सहायक क्रियाएँ सम्मिलित होंगी। जैसे—

कहता चला आ रहा है।

दिखा दिया जा सकता है।

पहले खाने में मुख्य क्रिया आती है, और दो से लेकर पाँच तक के खानों में सहायक क्रियाएँ आती हैं। छोटी से छोटी संयुक्त क्रिया दो घटकों से बनी हुई होगी—

१	२
चलता	है।
चला	गया।

संयुक्त क्रिया के विस्तार के संबंध में यह जान लेना आवश्यक है कि धातु में कुछ प्रत्ययों के जुड़ जाने के बाद, या कालबोधक 'है,' 'था' और 'गा' (लिंग, वचन और पुरुष से परिवर्तित इनके अन्य रूपों) के अनन्तर

१—प्रस्तुत सन्दर्भ में संयुक्त क्रियाओं पर केवल रूपात्मक दृष्टि से विचार किया गया है। रूपों का परस्पर भेद अर्थ पर ही आधारित है, किन्तु उन अर्थों का उल्लेख नहीं किया गया है।

क्रिया में विस्तार नहीं होता। इन प्रत्ययों को हम चरम प्रत्यय कह सकते हैं। कर (सो कर, उठ कर) तथा वृत्ति बोधक प्रत्यय (ओ, ऊँ, इए आदि) इसी प्रकार के प्रत्यय हैं। 'कर' वाला रूप संयुक्त क्रिया में सम्मिलित नहीं होता। वृत्ति-बोधक और काल-बोधक पद-ग्राम क्रमशः अंतिम सहायक क्रिया के साथ और अंतिम सहायक क्रिया के रूप में आते हैं।

जैसे :—

१	२	३	४	५
क— चलता	है।			
चलता	रहता	है।		
चला	दिया	करता	है।	
चला	दिया	जा	सकता	है।
ख— चलो।				
चलते	चलो।			
चला	दिया	करो।		
कहते	चले	जाया	करो।	
(शायद उसे) मिटा	दिया	जा	सकता	हो।

१.२.१. संयुक्त क्रिया के जिन पाँच खानों का ऊपर उल्लेख किया गया है, उनमें आने वाली क्रियाओं का वर्णन नीचे दिया जाता है। पहले खाने में 'सक' धातु के अतिरिक्त अन्य धातुएँ क्रिया रूप में आ सकती हैं। 'है' और 'था' (वचन, लिंग, पुरुष, से परिवर्तित इनके अन्य रूप) भी प्रथम खाने में आ सकते हैं।

पहले खाने में आने वाली क्रिया मुख्य क्रिया होती है। किंतु इसका एक अपवाद दिया जा सकता है—

चला आता है।

चला जाता है।

यहाँ मुख्य क्रिया दूसरे खण्ड में आयी हुई है, क्योंकि अन्य सहायक क्रियाओं की तरह यह अपना मुख्यार्थ नहीं छोड़ती। सामान्य रूप से मुख्य क्रिया प्रथम खण्ड में ही आती है।

अन्य खण्डों में आने वाली क्रियाएँ सहायक क्रियाएँ होती हैं। ये मुख्य क्रिया के अर्थ में परिवर्तन-परिवर्धन करती हैं। दूसरे खाने में आने वाली सहायक क्रियाएँ निम्नलिखित हैं—

आना—डाली भुक आती है। आँखें डबडवा आती हैं।	बनना—मुझसे हँसते नहीं बनता। रोते नहीं बनता।
उठना—वह काँप उठता है। चौक उठता है।	बसना—वह चल बसा। बैठना—वह अपना संतुलन खो बैठता है।
करना—वह हँसा करता है। खाया करता है।	वह सारी बातें समझ बैठा है।
चलना—तुम खाते चलो। सुनते चलो।	मारना—वह लिख मारता है। रखना—वह मशाल जलाये रखता है। उसने कल आने को कह रखा है।
चुकना—वह खा चुका है। सो चुका है।	रहना—वह पढ़ रहा है। वह वगीचे में प्रतिदिन जाता रहा है।
जाना—वह हँसता जाता है। पीता जाता है।	लगना—वह रह-रह कर हँसने लगता है। खेलने लगता है।
टपकना—वह रोज आ टपकता है।	लेना—वह अपना विस्तर समेट लेता है। वह सुबह नहा लेता है।
डालना—उसने मार डाला। वह खा डालता है।	सकना—वह दौड़ सकता है। वह तारे तोड़ सकता है।
देना—तुम एक गाना सुना दो। मधुर गीत सुनायी देता है।	होना—वह समझाता होगा। वह जरूर रात में खाँसता होगा।
घमकना—वह आ घमकता है।	
पड़ना—वह हँस पड़ता है। जाग पड़ता है।	
पाना—वह मुश्किल से पढ़ पाता है। सो पाता है।	

१. २. २. तीसरे खाने में आने वाली क्रियाएँ कम हैं। दूसरे खाने में आने वाली कुल २२ सहायक क्रियाएँ हैं। किन्तु तीसरे में आने वाली कुल १० हैं। वे इस प्रकार हैं :—

आना—खाते चले आये हैं ।
देखती चली आयी है ।

(गरमी) बढ़ी चली आती थी ।
दौड़ा चला आता है ।

करना—चले जाया करो ।
चरा दिया करता है ।
ले लिया करता है ।

चुकना—लिखा जा चुका है ।

जाना—कहती चली जाती है ।

बढ़ता चला जाता है ।

दौड़ा चला जाता है ।

ले जाया जाता है ।

तोड़ डाला गया ।

समेट दिया गया !

दे दिया जायेगा ।

होने दिया जाता है ।

दिखायी दे जाता है ।

पोंछना पड़ जाता है ।

दिखायी पड़ जाता है

उठा रह जाता है ।

बनवा लिया जाता है ।

उड़ाये लिये जाती थी ।

देना—ले जाने देता है ।

ठहर जाने देता है ।

पड़ा रहने देता है ।

पड़ना—सहते रहना पड़ता है ।

चुका लेना पड़ता है ।

चुका देना पड़ता है ।

रहना—डोता आ रहा है ।

ढोये आ रहा है ।

छिपा पा रही है ।

सुनता जा रहा था ।

सुनाया जा रहा है ।

बनाया जाता रहा है ।

लिये जा रहा है ।

चला जा रहा है ।

बांधे दे रही है ।

दिखायी दे रहा है ।

निगलना पड़ रहा है ।

दौड़ते फिर रहे हैं ।

लगना—सजाया जाने लगा ।

सुनायी देने लगी ।

जान पड़ने लगा ।

बना रहने लगा ।

सकना—ले जा सकता है ।

समझाया जा सकता है ।

उठा दे सकता है ।

उड़ता रह सकता है ।

बना रह सकता है ।

होना—हो गया होगा ।

लिखा गया होगा ।

कह दिया होता ।

कह रखा होगा ।

सो रहा होगा ।

देख लिया होगा ।

आ सका होता ।

लिख देना होगा ।

उपयुक्त उदाहरणों के आधार पर थोड़ा इस ओर संकेत किया जा सकता है कि तीसरे खण्ड में आने वाली सहायक क्रियाएँ दूसरे खण्ड में

आने वाली सहायक क्रियाओं पर प्रतिबंध रखती हैं। जैसे—ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट है कि यदि 'आना' तीसरे खण्ड में प्रयुक्त है तो दूसरे खण्ड में सामान्य रूप से 'चलना' का प्रयोग होगा। यदि तीसरे खण्ड में 'चुकना' का प्रयोग है तो दूसरे में सामान्य रूप से 'जाना' का प्रयोग होगा। इसी तरह अन्य सहायक क्रियाओं के ऊपर विचार किया जा सकता है। इस प्रकार का थोड़ा प्रयास यहाँ किया गया है, किंतु पर्याप्त सामग्री के अभाव में पूर्णता नहीं आ सकी है।

१. २. ३. चौथे खाने में आने वाली सहायक क्रियाएँ कुल ३ हैं।

रहना—दोड़ा चला आ रहा है।	कह दिया जा सकता है।
कहता चला आ रहा है।	सो लिया जा सकता है।
कहता चला जा रहा है।	खा लिया जा सकता है।
(बीमारी) बढ़ती चली जा रही है।	होना—बता दिया गया होगा।
सकना—ढाल दिया जा सकता है।	कह दिया गया होगा।

१. २. ४. पाँचवें खाने में आने वाली सहायक क्रियाएँ भी अत्यंत सीमित हैं। काल बोधक 'है' और 'था' पाँचवें खण्ड में आते हैं। 'होना' भी पाँचवें खण्ड में आ सकता है।

सुना दिया जाता रहा होगा।

कहता चला आ रहा { था ।
 है ।

१. २. ५. संयुक्त क्रिया के पाँचों खण्डों में आने वाली क्रियाओं का जो वर्णन ऊपर प्रस्तुत किया गया, उससे यह स्पष्ट हो चुका है कि परवर्ती खण्डों में आने वाली सहायक क्रियाओं की संख्या उत्तरोत्तर कम होती गई है। प्रथम खाना मुख्य क्रिया का है, और उस खाने में आनेवाली क्रियाओं की संख्या बहुत अधिक है। दूसरे खाने में आने वाली क्रियाएँ उससे कम हैं। तीसरे में आनेवाली सहायक क्रियाएँ दूसरे में आने वाली क्रियाओं से कम हैं। चौथे में आने वाली सहायक क्रियाएँ तीसरे में आनेवाली सहायक क्रियाओं से कम हैं। चौथे और पाँचवें में आने वाली सहायक क्रियाएँ संख्या की दृष्टि से समान हैं। इसके साथ ही एक विशेषता और दिखाई देती है। परवर्ती खण्ड में आने वाली सहायक क्रियाएँ पूर्ववर्ती खण्डों में आ सकती हैं, जब कि पूर्ववर्ती खण्ड

में आने वाली सभी सहायक क्रियाएँ परवर्ती खण्ड में नहीं आ सकतीं। जैसे पाँचवे खाने में आने वाली क्रिया 'है', या 'था' या 'होना' ४, ३, २, और १ में भी आ सकती हैं। इसी तरह चौथे खाने में आने वाली क्रिया 'रहना' ३, २ और १ में भी आ सकती है। इसी तरह अन्य सहायक क्रियाओं के बारे में भी कहा जा सकता है। 'सकना' अपवाद है, क्योंकि यह क्रिया खण्ड ४, ३, और २ में ही आ सकती है, १ में नहीं।

१. २. ६. कुछ अन्य प्रकार की संयुक्त क्रियाएँ नीचे प्रस्तुत की जाती हैं। इनको अलग से रखने का कारण यह है कि अर्थ की दृष्टि से इनको संयुक्त कहना कठिन होगा। इनमें पहले खाने में आने वाली धातुएँ अधिकतर पूर्वकालिकता का अर्थ देती हैं।

गिरना—जा गिरा।	घूमता
डूबना—ले डूबता है।	दौड़ता
निकलना—आ निकला।	ढूँढ़ता
बच निकलता है।	बना
निकालना—सोच निकालता है।	भागना—निकल भागा।
ढूँढ़ निकालता है।	लाना—पकड़ लाता है।
पहुँचना—आ पहुँचा।	बटोर
फिरना—लौटती-फिरती थी।	बना
खेलता फिरता है।	बहला
कूदता	उठा

१. ३. १. सहायक क्रिया अपने पूर्व आने वाली मुख्य क्रिया या सहायक क्रिया के रूप को नियंत्रित करती है। जैसे—'चुकना' अपने पूर्व मुख्य क्रिया या सहायक क्रिया को सदा धातु रूप में ही आने देता है—

खा चुका है।

खाया जा चुका है।

'करना' अपने पूर्व आने वाली मुख्य क्रिया या सहायक क्रिया को एक विशेष रूप में ही आने देता है।

खाया करता है ।

सुना दिया करता है ।

यहाँ 'खाया' और 'जाया' को पूर्ण अवस्था बोधक आ-प्रत्ययान्त नहीं कहा जा सकता । इसके लिए दो कारण दिये जा सकते हैं । पहला, 'जा' के साथ जब करना संयुक्त होता है तो 'जाया' रूप बनता है, 'गया' नहीं । दूसरा, अवस्था बोधक आ-प्रत्ययान्त क्रियारूप लिंग वचन से प्रभावित होता है—

पढ़ गया — पढ़ गये ।

पढ़ गयी — पढ़ गयीं ।

किन्तु 'करना' के पूर्व आने वाला क्रिया रूप अव्यय रूप में प्रयुक्त होता है ।

जाया करता है ।

जाया करते हैं ।

जाया करती है ।

जाया करती हैं ।

'लगना' अपने पूर्व आने वाली

सहायक या मुख्य क्रिया के ने-सहित रूप को ही आने देता है ।

जाने लगता है ।

खाया जाने लगता है ।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि सहायक क्रिया अपनी पूर्ववर्ती क्रिया के रूप को नियंत्रित करती है । इस दृष्टि से सभी सहायक क्रियाओं का वर्णन नीचे प्रस्तुत किया जाता है । यहाँ अकर्मक और सकर्मक मुख्य क्रियाओं के भेद से आने वाली विशेषताओं पर भी ध्यान रखा गया है । कुछ सहायक क्रियाएँ केवल सकर्मक मुख्य क्रिया के साथ आती हैं और कुछ अकर्मक मुख्य क्रिया के साथ आती हैं । कुछ दोनों प्रकार की मुख्य क्रियाओं के साथ आ सकती हैं । इस तरह सहायक क्रियाओं को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है ।

१. ३. २. अकर्मक मुख्य क्रिया के साथ आने वाली सहायक क्रियाएँ

उठना—मुख्य धातु + उठना ।

संभल उठता है ।

टपकना—धातु + टपकना

आ टपकता है ।

काँप

चीख

चोंक

बिलख

रो

धमकना—मुख्य धातु + धमकना
आ धमकता है ।बसना—मुख्य धातु + बसना
चल बसा ।

यहाँ अकर्मक मुख्य क्रिया के साथ आने वाली सभी सहायक क्रियाएँ मुख्य क्रिया के धातु रूप से संयुक्त होती हैं ।

१. ३. ३. ख—सकर्मक मुख्य क्रिया के साथ आने वाली सहायक क्रियाएँ :—

डालना—मुख्य धातु + डालना
तोड़ डालता है ।

मार

खा

पी

मारना—मुख्य धातु + मारना

लिख मारना

दे

धातु + ए + रखना

जलाये रखता है ।

रखती है ।

रखते हैं ।

रखती हैं ।

बनाये रखता है ।

रखना—मुख्य धातु + रखना

कह रहा है ।

समझ

लगा

गढ़

उठा

बाँध

निकाल

दे

१. ३. ४. अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की मुख्य क्रियाओं के साथ आने वाली सहायक क्रियाएँ :—

आना—

अकर्मक क्रिया के साथ—

धातु + आना

(भाव) उमड़ आते हैं ।

(आँखें) डबडबा आती हैं ।

(डाली) झुक आती है ।

(नशा) उतर आता है ।

धातु + ता + आना

सहता आया है ।

बढ़ता

हँसता

धातु + आ + आना

चला आया है ।

दौड़ा आया है ।

सकर्मक क्रिया के साथ—

धातु + आना

पी आता है ।

देख

सुन

कह

धातु + ता + आना

पाता आया है ।

कहता

सुनता

देता

धातु + ए + आना

लिये आता हूँ ।

पढ़े

देखे

कहे

यहाँ सकर्मक धातु + आना और सकर्मक धातु + ए + आना से बनने वाली संयुक्त क्रियाओं में वह अर्थगत एकता नहीं है जो सकर्मक धातु + ता + आना से बनने वाली संयुक्त क्रियाओं में या अकर्मक क्रिया के विभिन्न रूपों और आना के संयोग से बनने वाली संयुक्त क्रियाओं में है ।

करना—अकर्मक क्रिया के साथ—

धातु + आ + करना

जाया करता है ।

हँसा

घूमा

टहला

सकर्मक क्रिया के साथ—

धातु + आ + करना

दिया करता है ।

सुना

कहा

लिया

चलना—अकर्मक क्रिया के साथ—

धातु + चलना

उमड़ चला ।

वह

बढ़

लौट

पक

धातु + ता + चलना

चलता चलेगा ।

हँसता

सोता

धातु + आ + चलना

दौड़ा चलूँगा ।

चला

धातु + ने + चलना

वह मुझसे बनने चला है ।

वह दिन में सोने चला है ।

तुम मुझ पर हँसने चले हो ।

सकर्मक क्रिया के साथ

धातु + चलना

कह चलो ।

सुना	कह
धातु + ता + चलना	सुना
लेती चलो ।	दे
खाते चलो ।	पी
सुनते चलो ।	जाना—अकर्मक क्रिया के साथ
धातु + ने + चलना	• धातु + जाना
बताने चला है ।	सह जाता है ।
सुनाने	धुल
दिखाने चला है ।	बिखर
चुकना—अकर्मक क्रिया के साथ	पिस
धातु + चुकना	बैठ
सो चुका है ।	दिख
हँस	धातु + आ + जाना
टहल	(वह) लौटा जाता है ।
घूम	धुला
जा	गला
सकर्मक क्रिया के साथ	छिपा
धातु + चुकना	चला
खा चुका है ।	चलो, उड़ा जाय ।
	वहाँ जाया जाय, या नहीं ।

धातु में पूर्ण अवस्था बोधक 'आ' लगाकर उसके बाद जाना को जोड़ कर वाच्य परिवर्तन किया जाता है। जैसे सुना जाता है। किंतु ऊपर के उदाहरणों में वाच्य परिवर्तन नहीं हुआ है। इसका कारण यह दिया जा सकता है कि ये अकर्मक क्रियाएँ हैं। भाववाच्य में इनका प्रयोग किया जा सकता है।

निषेधवाचक 'नहीं' को जोड़कर—

(उससे नहीं) लौटा जाता ।

चला

उड़ा

छिपा

हँसा

धातु + ता + जाना
हँसता जाता है ।
दौड़ता
खाँसता
सकर्मक क्रियाओं के साथ—

धातु + जाना
(एक साँस में वह सब) सुना जाता है ।
खा
पी

धातु + आ + जाना
लिया जाता है ।

खाया

गाया

पूछा

दिवा

सकर्मक क्रिया के साथ आ + जाना से वाच्य परिवर्तन हो गया है । किंतु सकर्मक धातु + ए + जाना से वाच्य परिवर्तन नहीं होता । जैसे :—

(वह) गाये जाता है ।

खाये

दिये

लिये

सुनाये

सुनाये, दिये आदि रूप लिंग,
वचन और पुरुष से नहीं बदलेंगे ।

वह (पु.) लिये जाता है ।

वह (स्त्री.) लिये जाती है ।

वे (पु.) लिये जाते हैं ।

वे (स्त्री.) लिये जाती हैं ।

तुम (पु.) लिये जाते हो ।

तुम (स्त्री.) लिये जाती हो ।

मैं (पु.) लिये जाता हूँ ।

मैं (स्त्री.) लिये जाती हूँ ।

धातु + ता + जाना

(वह) कहता जाता है ।

सुनता

बढ़ाता

खाता

देता

देना—अकर्मक क्रिया के साथ

धातु + देना

हँस देना

रो

छींक

खाँस	जाग
धातु + ने + देना	भुंभला
रोने देना ।	रो
हँसने	धातु + ना + पड़ना
टूटने	हँसना पड़ा ।
बचने	रोना
सकर्मक क्रियाओं के साथ	जागना
धातु + देना	खेलना
लगा देना ।	दौड़ना
खिला	धातु + आ + पड़ना
बचा	(वह) उछला पड़ता था ।
सुना	उबला
दिला	टपका
दिखा	यहाँ संयुक्त क्रिया का प्रयोग
धातु + ने + देना	कर्तृवाच्य में है ।
खिलाने देना ।	सकर्मक क्रिया के साथ
लगाने	धातु + ना + पड़ना
बचाने	लेना पड़ा ।
दिखाने	बताना
धातु + ई + देना	खाना
सुनायी देता है ।	पीना
दिखायी	धातु + ई + पड़ना
धातु + ए + देना	सुनायी पड़ता है ।
(वह) उड़ाये देता है ।	दिखायी
हिलाये	पाना—अकर्मक क्रियाओं के साथ
कहे	धातु + पाना
बनाये	(वह नहीं) रो पाया ।
दुकरारे	हँस
डाले	धुस
पड़ना—अकर्मक क्रिया के साथ	भाग
धातु + पड़ना	
हँस पड़ता है ।	

धातु + ने + पाना
(वह नहीं) घुसने पाता ।

चलने

हँसने

निकलने

सकर्मक क्रियाओं के साथ

धातु + पाना

(वह नहीं) खा पाता ।

देख

समझा

बना

दे

धातु + ने + पाना

(वह नहीं) खाने पाता ।

देखने

समझने

बनाने

बनना—

अकर्मक क्रियाओं के साथ

धातु + ते + बनना

(उससे) हँसते बनता है ।

रोते

सकर्मक क्रियाओं के साथ

धातु + ते + बनना

(उससे यह) चबाते बनता है ।

देखते

सुनाते

दिखाते

बैठना—

अकर्मक क्रियाओं के साथ

धातु + बैठना

संभल बैठता है ।

उठ

सकर्मक क्रियाओं के साथ

धातु + बैठना

खा बैठता है ।

पी

छोड़

पूछ

धातु + ए + बैठना

(वह सब कुछ) समझे बैठता है ।

पढ़े

सोचे

खाये

रहना—

अकर्मक क्रियाओं के साथ

धातु + रहना

सो रहा है ।

जगा

चीख

धातु + ता + रहना

हँसता रहा ।

सोता

चीखता

धातु + आ + रहना

सोया रहता है ।

सजा

बना

खुला

सकर्मक क्रियाओं के साथ

धातु + रहना

समझा रहा है ।

देख

खा

पी

धातु + ए + रहना
 (वह कपड़ा) पहने रहता है ।
 (वह शरीर) ढके रहता है ।
 (वह सब) लिये रहता है ।
 दूसरे रूप में—
 (कपड़ा) पहना रहता है ।
 (शरीर) ढका रहता है ।
 (अकर्मक क्रिया के रूप में)

धातु + ता + रहना
 खाता रहा है ।
 समझाता
 पीता
 दिखाता
 लगना—
 अकर्मक क्रियाओं के साथ

धातु + ने + लगना
 हँसने लगा है ।
 रोने
 चलने
 जाने
 सकर्मक क्रियाओं के साथ

धातु + ने + जाना
 खाने लगता है ।
 देखने
 देने
 लेने
 लेना—
 अकर्मक क्रियाओं के साथ
 धातु + लेना
 सो लेता है ।

हँस लेता है ।
 रो

धातु + ए + लेना
 (मैं भी) हँसे लेता हूँ ।
 जगे
 चले
 सकर्मक क्रियाओं के साथ

धातु + लेना
 खा लेता है ।
 समेट
 चुरा
 उड़ा

धातु + ए + लेना
 (वह) उड़ाये लेता है ।
 चुराये
 गूँथे

सकना—
 अकर्मक क्रियाओं के साथ
 धातु + सकना
 हँस सकता है ।

रो
 सो
 जाग
 सकर्मक क्रियाओं के साथ

धातु + सकना
 खा सकता है ।
 दे
 दिला
 भेज

होना —

अकर्मक क्रियाओं के साथ
धातु + ता + होना

शरमाता होगा ।

हँसता

रोता

धातु + ना + होना

हँसना होगा ।

रोना

बनना

धातु + आ + होना

(वह) हँसा होगा ।

रोया

सोया

गिना

बुना

बँधा

सकर्मक क्रियाओं के साथ

धातु + ता + होना

खाता होगा ।

पीता

देता

लेता

धातु + ना + होना

खाना होगा ।

पीना

समझाना

लेना

धातु + आ + होना

दिया होगा ।

लिखा

पढ़ा

सुना

धातु + ए + होना

(वह सब कुछ) दिये हुए है ।

गिने

बनाये

दूसरे रूप में—

धातु + आ + होना

(सब कुछ) गिना हुआ है ।

दिया

बनाया

वाच्य परिवर्तन हो गया ।

१. ३. ५. ऊपर अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की मुख्य क्रियाओं के साथ आने वाली सहायक क्रियाओं का वर्णन किया गया । ऊपर दिये गये उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं के कारण संयुक्त क्रियाओं की रचना में कभी-कभी अन्तर आ जाता है । यह आवश्यक नहीं है कि जो कोई सहायक क्रिया अकर्मक क्रिया के जिन रूपों के साथ संयुक्त हो, वह सकर्मक क्रिया के भी उन्हीं रूपों के साथ संयुक्त हो । ऐसा भी होता है कि एक ही सहायक क्रिया सकर्मक के साथ संयुक्त होकर कुछ अर्थ दे सकती है और अकर्मक के साथ संयुक्त होकर कुछ अन्य अर्थ । ऊपर के उदाहरणों से दोनों बातें स्पष्ट हो गयी हैं । उन्हीं उदाहरणों में से कुछ की ओर यहाँ संकेत किया जा सकता है । जैसे :—

पहला उदाहरण—

अकर्मक धातु + आना

उमड़ आता है ।

भुक आता है ।

सकर्मक धातु + आना पी आता है ।

दोनों प्रकार की संयुक्त क्रियाओं की तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि 'उमड़ आता है' में 'उमड़' और 'आता है' जिस भाँति संयुक्त हैं, उस भाँति 'पी आता है' में 'पी' और 'आता है' नहीं हैं । 'पी' में पूर्वकालिक रूप की भूलक मिलती है ।

दूसरा उदाहरण— 'देना' सकर्मक क्रिया के जिस रूप से संयुक्त हो सकता है, वह रूप अकर्मक क्रिया में नहीं मिलेगा—

सुनायी देता है ।

दिखायी देता है ।

अकर्मक क्रिया के साथ इस प्रकार की रचना नहीं होगी ।

तीसरा उदाहरण—

'पढ़ना' अकर्मक क्रिया के साथ इस रूप में मिल सकता है ।

हैंस पड़ता है

जाग

रो

सकर्मक क्रिया के साथ इस प्रकार की रचना नहीं मिली—खा पड़ता है, लिख पड़ता है, आदि ।

चौथा उदाहरण—

अकर्मक क्रिया के साथ 'जाना' का जब इस प्रकार प्रयोग होता है तो वाच्य परिवर्तन नहीं होता —

(वह चिन्ता में) धुला जाता है ।

(वह सुवह) चला जाता है । आदि ।

किन्तु सकर्मक क्रिया के साथ जब इस प्रकार की रचना में जाना प्रवेश करता है तो वाच्य परिवर्तन हो जाता है ।

(वह) खाया जाता है ।

(वह) पढ़ा जाता है । आदि ।

१. ३. ४. में दिये गये उदाहरणों को ध्यान पूर्वक देखने पर अकर्मक और सकर्मक मुख्य क्रियाओं के कारण संयुक्त क्रिया की रचना और अर्थ में कई जगह भेद दिखायी देंगे ।

१. ३. ६. संयुक्त क्रिया में सम्मिलित सहायक क्रियाओं का वर्णन कई दृष्टियों से किया जाना चाहिए । तभी संयुक्त क्रियाओं का वर्णन पूरा होगा । यहाँ जो वर्णन प्रस्तुत किया गया, वह आंशिक है, और सीमित सामग्री पर आधारित है ।

२. १. संज्ञा या विशेषण से बनने वाली संयुक्त क्रियाएँ —

रचनात्मक दृष्टि से साधारण क्रिया दोनों प्रकार की संयुक्त क्रियाओं से भिन्न है । मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया से बनने वाली संयुक्त क्रिया उन सभी रूपों में परिवर्तित नहीं होती जिन रूपों में साधारण क्रिया होती है । —ता हुआ,—आ हुआ और—कर के साथ सामान्य रूप से प्रथम प्रकार की संयुक्त क्रिया नहीं आती जबकि साधारण क्रिया मजे में आती है ।^१

गिरता हुआ ।

खाता हुआ ।

गिरा हुआ ।

खाया हुआ ।

गिरकर ।

खाकर ।

किन्तु

गिर पड़ता हुआ ।

खा लेता हुआ ।

गिर पड़ा हुआ ।

खा लिया हुआ ।

गिर पड़कर ।

खा लेकर ।

ये रूप नहीं होंगे ।

दूसरे प्रकार की संयुक्त क्रिया —ना हुआ,—आ हुआ और—कर के रूपों में आ सकती है । इस दृष्टि से दूसरे प्रकार की संयुक्त क्रिया साधारण क्रिया के समान हैं —

१—प्रस्तुत सन्दर्भ के लिए बर्टन पेज का एक निबन्ध अवलोकनीय है—

कम्पाउड एन्ड कन्जन्क्ट वर्बस्—बी० यस० ओ० ए० यस०

वाल्थ्यू xix, १६५७ भाग—३

किया हुआ ।

करता हुआ ।

क्षमा किया हुआ ।

क्षमा करता हुआ ।

करके ।

क्षमा करके ।

किन्तु साधारण क्रिया और द्वितीय संयुक्त क्रिया को इस रचनात्मक समानता के कारण एक नहीं कहा जा सकता ; क्योंकि द्वितीय संयुक्त-क्रिया की संज्ञा को उससे पृथक् करके संयुक्त-क्रिया को साधारण-क्रिया के रूप में नहीं बदला जा सकता । इस को स्पष्ट करने के लिए 'वर्टन पेज' ने विविध प्रकार के वाक्यों का उल्लेख किया है । वाक्य-रचना पर प्रभाव डालने की दृष्टि से हिन्दी की क्रियाओं को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है ।

अकर्मक क्रिया

वह हँसता है ।

(कर्ता, क्रिया)

वह चलता है ।

सकर्मक क्रिया

वह दूध पीता है ।

(कर्ता, कर्म, क्रिया)

वह किताब पढ़ता है ।

द्विकर्मक क्रिया

वह मुझको किताब देता है ।

(कर्ता, कर्म, कर्म, क्रिया)

वह मुझ से समाचार पूछता है ।

तुलना के लिए साधारण-क्रिया और द्वितीय संयुक्त-क्रिया के उदाहरण नीचे दिये जाते हैं ।

क—उसने मुझको किताब दी ।

(साधारण क्रिया)

ख—उसने मुझको किताब दान दी ।

(संयुक्त क्रिया)

किताबें दान दीं ।

रुपया दान दिया ।

रुपये दान बिये ।

दोनों (क, ख) प्रकार के वाक्यों की रचना समान है—कर्ता, कर्म, कर्म, क्रिया। किन्तु प्रथम वाक्य में 'दी' साधारण-क्रिया है और द्वितीय वाक्य में 'दान दी' संयुक्त-क्रिया है। 'दान' के लिंग और वचन से 'देना' क्रिया रूपान्तरित नहीं होती, इसलिए उसे क्रिया का भाग माना जा सकता है। यदि 'दान' को जोकि स्वतन्त्र रूप में संज्ञा है, क्रिया से पृथक् कर दिया जायगा तो कठिनाई होगी। फिर वाक्य-रचना बदल जाएगी—कर्ता, कर्म, कर्म, कर्म क्रिया। इस तरह की वाक्य-रचना को स्वीकार करने से अधिक सुविधा-जनक 'दान देना' को संयुक्त-क्रिया मान लेना है। इसलिए संज्ञा और सहायक क्रिया से मिलकर बनने वाली संयुक्त-क्रिया को साधारण-क्रिया से पृथक् स्वीकार किया जाता है।

2.2. ऊपर के विवरण से यह स्पष्ट होता है कि जो संज्ञा, क्रिया के निकट स्थित हो और क्रिया के लिंग-वचन को प्रभावित न करे, उसे क्रिया का भाग स्वीकार कर लेना चाहिए। जैसे, याद करना, क्षमा करना, दान करना आदि। इनमें याद, क्षमा, और दान तथा करना के बीच 'को' परसर्ग नहीं प्रयुक्त हो सकता। आशा करना, विवाह करना, प्रशंसा करना आदि को संयुक्त क्रिया नहीं माना जा सकता क्योंकि आशा, विवाह और प्रशंसा 'करना' के लिंग वचन को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार संयुक्त-क्रिया का निर्णय करने के लिए यह जानना आवश्यक होगा कि अमुक संज्ञा, क्रिया को प्रभावित करती है, या नहीं। अब प्रश्न यह है कि इस प्रकार हुई संयुक्त-क्रिया का निर्णय करने से भाषा के वर्णन में कौन-सी सुकरता आजाती है? यदि किसी को पहले से ज्ञात हो कि 'याद करना' संयुक्त-क्रिया है तो उसे इस जानकारी से यह लाभ होगा कि 'करना' को 'याद' के लिंग-वचन के अनुसार परिवर्तित नहीं करेगा। किन्तु यदि उसे पहले 'याद करना' के समस्त प्रयोगों को जानना पड़ता है और इसके बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि याद करना संयुक्त-क्रिया है तो इस जानकारी का, भाषा प्रयोग में कोई लाभ नहीं होगा। इस कठिनाई को दूर करने का एक उपाय हो सकता है। ऐसी संज्ञाओं की सूची तैयार कर दी जाय जो संयुक्त-क्रिया में सम्मिलित होती हों, और जिनके लिंग-वचन से क्रिया प्रभावित न होती हो। किन्तु यह शब्द-सूची कितनी बड़ी होगी; यह अनुसंधान का विषय है। लेकिन जब शब्द-सूची की बात उठती है तो आशा करना, प्रशंसा करना को भी क्यों न संयुक्त-क्रिया मान ली जाय और एक दूसरी

शब्द-सूची तैयार कर दी जाय जिसमें ऐसी संज्ञाएँ हों जो क्रिया के लिंग-वचन को प्रभावित करती हों। इस तरह द्वितीय संयुक्त-क्रिया के लिए दो प्रकार की शब्द-सूचियाँ तैयार की जा सकती हैं। दोनों प्रकार की शब्द-सूचियों में आने वाली संज्ञाओं में प्रयोगगत भेद और समानता दिखायी जानी चाहिए। आशा करना और क्षमा करना में एक संयुक्त-क्रिया नहीं है और एक संयुक्त-क्रिया है यह मानना अधिक संगत नहीं मालूम पड़ता। वेली ने अपनी पुस्तक 'टीच योरसेल्फ हिन्दुस्तानी' में संज्ञा से बनने वाली संयुक्त-क्रियाओं को तीन वर्गों में विभक्त किया है। पहले वर्ग में याद करना, दान करना आदि हैं। जिनमें संज्ञा, क्रिया को प्रभावित नहीं करती। दूसरे वर्ग में 'प्रशंसा करना, आशा करना आदि हैं जिनमें संज्ञा के पूर्व का, की ओर से जुड़ते हैं। जैसे—

मैं उसकी प्रशंसा करता हूँ।

मैं जाने की आशा करता हूँ।

तीसरे वर्ग में शिक्षा देना, आशा देना आदि हैं जिनमें संज्ञा के पूर्व 'को' आता है। जैसे—

मैंने उसको शिक्षा दी।

मैंने उसको आशा दी।

दूसरे और तीसरे वर्ग में आने वाली संयुक्त-क्रियाओं की संज्ञाएँ, क्रिया के लिंग-वचन को प्रभावित करती हैं किन्तु उनमें परस्पर भेद यह है कि दूसरे वर्ग की संयुक्त-क्रिया के पूर्व का, की, के आता है और तीसरे वर्ग की संयुक्त-क्रिया के पूर्व 'को' आता है। प्रत्येक वर्ग की संयुक्त-क्रिया के बीच में 'को' नहीं आता। आशा को करना, शिक्षा को देना आदि नहीं होंगे।

2.3 संज्ञा की तरह विशेषणों से भी संयुक्त-क्रियाएँ बनती हैं। खुश करना, प्रसन्न करना, दुखी करना, प्रसन्न होना, दुखी होना, प्राप्त होना आदि। संज्ञा की तरह विशेषणों में कठिनाई नहीं है। वचन और लिंग भेद विशेषणों में (आकारान्त विशेषणों को छोड़कर) नहीं पाया जाता।

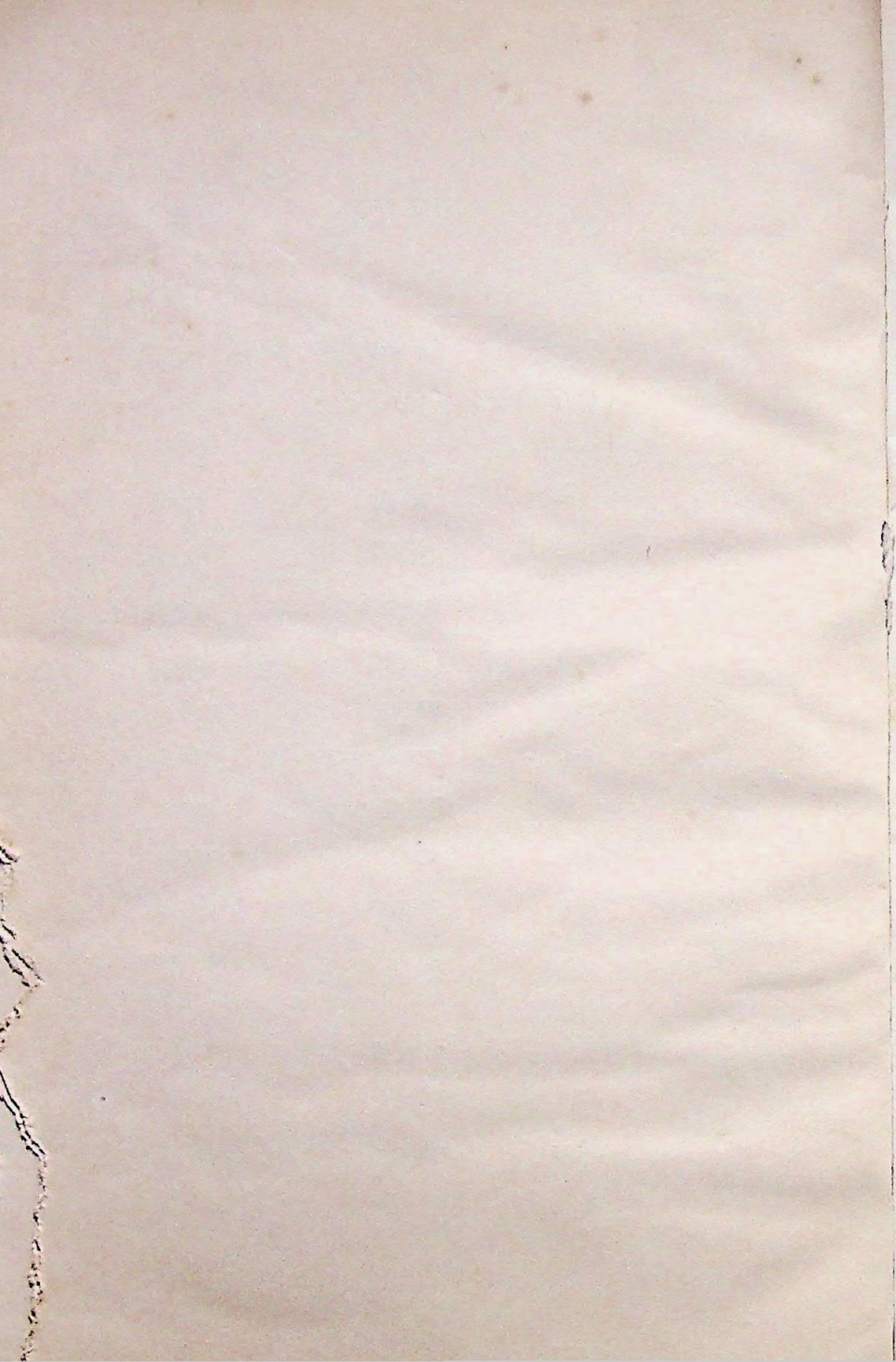
2.4. संज्ञाभोर विशेषण के साथ मुहावरेदार प्रयोग में सम्मिलित होने वाली क्रियाओं की संख्या निश्चित की जा सकती है । नीचे ३६ क्रियाओं की सूची दी जा रही है ।

करना	मारना
लेना	निकलना-निकालना
मचना-मचाना	मांगना
पड़ना	पाना
लगना-लगाना	चढ़ना-चढ़ाना
रखना	जमना-जमाना
छाना	झुबना
देना	बनना
खाना	उड़ना-उड़ाना
लड़ना	उठाना
आना	खाना
रहना	चुकाना
डालना	मिलना
चलना-चलाना	मनाना
पहुँचना-पहुँचाना	जाना

खून करना, नाम लेना, शोर मचाना, ठण्डा पड़ना, अच्छा लगना, नशा छाना, आदि ।

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
२	२२	संख्याओं	प्रयोगों
११	४	काट जाता है	काट पाता है
१३	अंतिम पंक्ति	हैं	है
१५	१८	उठा ले	उठा लें
१६	६	एंठें होंगे	एंठें होंगे
२२	२८	आभूषणों	आभूषणों ?
३२	१६	उठता	उठाता
३२	२१	सम्पति	संपत्ति
३३	२०	मार लीया	मार लिया
३८	२	जुटाना	जुटना
३८	३	घटों	घंटों
४६	४	पद-ग्राम	पदग्राम
५२	८	३	५ (चुकना और लगना भी)
६४	२४	-ना हुआ	-ता हुआ
६६	१६	हुई	की
६६	अंतिम	ली जाय	लिया जाय
६७	१०	से	के





दोरोनेशन प्रेम आगरा